(1)

मूल्यांकन योजना (प्रथम वर्ष)

क्र.स.	प्रश्न पत्र	प्रश्न पत्र का नाम	मूल्यांकन		
			बाह्य मूल्यांकन	आन्तरिक मूल्यांकन	योग
1.	प्रथम प्रश्न पत्र	बच्चे और बचपन	70	30	100
2.	द्वितीय प्रश्न पत्र	शिक्षा के उद्देश्य, ज्ञान और पाठ्यचर्या	70	30	100
3.	तृतीय प्रश्न पत्र	भारतीय समाज और शिक्षा	70	30	100
4.	चतुर्थ प्रश्न पत्र	भाषा, संज्ञान और समाज, पाठ्यचर्या के संदर्भों में	35	15	50
5.	पंचम प्रश्न पत्र	हिन्दी भाषा–शिक्षण और प्रवीणता	60	40	100
6.	षष्टम प्रश्न पत्र	अंग्रेजी भाषा–शिक्षण और प्रवीणता	60	40	100
7.	सप्तम प्रश्न पत्र	गणित शिक्षण	60	40	100
8.	अष्टम प्रश्न पत्र	पर्यावरण अध्ययन शिक्षण	60	40	100
9.	नवम् प्रश्न पत्र	कला शिक्षण	20	30	50
10.	दशम् प्रश्न पत्र	सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी (ICT)	20	30	50
	योग		525	325	850
		विद्यालय अनुभव	75	175	250
	महायोग		600	500	1100

(2)

बाल अध्ययन

बच्चे और बचपन

कुल अंक–100
आंतरिक मूल्यांकन–30
बाह्य मूल्यांकन–70
कालांश–140

परिप्रेक्ष्य

बच्चों व बचपन के बारे में हमारे समाज में कई धारणाएँ हैं जो उनके प्रति हमारे व्यवहार को प्रभावित करती हैं जैसे बच्चे भगवान के रूप हैं, या बच्चे गीली मिट्टी की तरह हैं जिन्हें मनचाहा रूप दे सकते हैं, बच्चे भोले और कमजोर होते हैं, बच्चे नन्हे पौधे की तरह होते हैं, जिनकी रक्षा और परवरिश हमें करनी हैं, बच्चे आंगन के फूल हैं......आदि.आदि। दूसरे नजरिये से देखें तो बच्चे सूझ–बूझ वाले, अपनी भलाई समझने वाले, खुद के लिए निर्णय लेने के लिए सक्षम, निडर, साहसी, जिज्ञासु, अनवरत परिश्रमी, असीम ऊर्जा वाले, स्वाभिमानी आदि लगते हैं। इनके पीछे क्या वास्तविकता है, इन धारणाओं का बच्चों की परवरिश और शिक्षा पर क्या प्रभाव पड़ता है? इन प्रश्नों पर विचार–विमर्श करने का प्रयास है।

दरअसल बचपन की धारणाओं का एक सामाजिक व ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य भी है। जिन विचारों के चलते बच्चों और उनके अधिकारों से संबंधित कानून एवं कार्यक्रम तैयार किये जाते हैं, वे आधुनिक समाज की देन है। हम जिन बच्चों को पढ़ा रहे हैं वे एक मिश्रित समाज है (जिसमें साधन संपन्न समाज के साथ साथ पारम्परिक खेती, दस्तकारी, घुमन्तु एवं वंचित वर्ग आदि भी शामिल हैं) जहाँ बचपन के बारे में कई अन्य धारणाएँ भी प्रचलन में हैं जिनसे हमें जूझना होगा।

सभी बच्चों का बचपन एक समान नहीं होता है जैसे भेड़पालकों के बच्चे, आदिवासी बच्चे, मध्यमवर्गीय परिवार के बच्चे, शहर के फुटपाथ और झुग्गियों के बच्चे, किसानों के बच्चे, सुविधा संपन्न एवं अभावग्रस्त वर्ग के बच्चे। क्या इनका बचपन एक समान हो सकता है? क्या किसी गांव की लड़की और लड़के का बचपन एक सा होता है?, क्या सवर्ण और दलित वर्ग के बच्चों का बचपन एक जैसा होता है? क्या परिवार के संरक्षण में पल रहे बच्चे और अनाथालयों व रेलवे प्लेटफार्म पर पल रहे बच्चों का बचपन एक सा हो सकता है? ये सब बच्चे जब विद्यालय आते हैं, वे किस तरह के अनुभव और ज्ञान लेकर आते हैं? उनकी आवश्यकताएँ और विद्यालय से उनकी क्या अपेक्षाएँ होंगी? वास्तव में बचपन पर सामाजिक व सांस्कृतिक परिस्थितियों का बड़ा प्रभाव है इसको समझना भी विषयान्तर्गत आवश्यक होगा। बाल अध्ययन के माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षक बच्चों की विभिन्न आवश्यकताओं को विकास के अलग–अलग चरणों के संदर्भ में देखने के साथ साथ उन बच्चों की सांस्कृतिक पृष्ठ भूमि में भी देख सकेंगे।

हम सभी सहमत हैं कि बचपन एक ऐसी अवस्था है जिसमें शारीरिक क्षमता और व्यक्तित्व का विकास बहुत तेज होता है। लेकिन विकास क्या है, क्या वह केवल बचपन तक सीमित है, क्या उसकी कुछ विशिष्ट अवस्थाओं को पहचाना जा सकता है? यह विकास किन बातों पर निर्भर है, क्या हम इसमें हस्तक्षेप कर सकते हैं? छः से चौदह साल के बच्चे जो विद्यालय में पढ़ने आते हैं वे किन–किन मानसिक और शारीरिक विकास की दशाओं से गुजर रहे होते हैं? इन सभी का भी इस विषयान्तर्गत अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

- बच्चों व बचपन के बारे में प्रचलित आम धारणाओं की समीक्षा करना।
- बच्चों के विकास के शारीरिक, संवेगात्मक, संज्ञानात्मक एवं सामाजिक विकास के पहलूओं को समझना।
- बच्चों को वर्तमान समाज के मूल्यों के अनुरूप कैसे अनुकूलित किया जाता है (समाजीकरण की प्रक्रिया) इस बात को समझना व समालोचना करना।
- बच्चों के विकास के अलग–अलग पड़ाव क्या है और उस दौरान उनकी आवश्यकताएँ एवं कौशल कैसे बदलती हैं, इस बात को समझना।
- राजस्थान के विभिन्न समुदायों के बच्चों के जीवन को समझना।
- बच्चों के बारे में जानने व उनको समझने के विशिष्ट तरीकों को समझना और उनमें कुशलता प्राप्त करना।

Scanned with OKEN Scanner

इकाईवार विवरण

इकाई–1. बचपन **अंक–5**

स्वयं के बचपन के अनुभव : स्मरण एवं उनका विश्लेषण, बच्चों की छवि पर विमर्श : बाल.साहित्य के संदर्भ में, बच्चों के साथ काम करने वाले चिन्तकों के विचारों से परिचय : गिजूभाई, जॉन हाल्ट, ए.एस. नील, विभिन्न समुदायों के बच्चों का बचपन।

इकाई–2. बचपन की संकल्पना **अंक–10**

बचपन की संकल्पना – ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं समय के साथ आए परिवर्तनों की समझ, आज के संदर्भ में बचपन को आकार देनेवाले प्रमुख पहलुओं का विश्लेषण, बाल अधिकारों की समझ – संकल्पना का विकास व आज के परिदृश्य मे बाल अधिकार, शिक्षा के मौलिक अधिकार : निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, राजस्थान में समेकित बाल संरक्षण योजना की कार्यरत संरचनाएँ, बाल अधिकारों के हनन को रोकने के लिए गठित समितियाँ।

इकाई–3. बाल विकास के परिप्रेक्ष्य **अंक–10**

बाल विकास की अवधारणा – विकास के विभिन्न आयाम, विकास के विभिन्न सिद्धांत,विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक, विकास की विभिन्न अवस्थाएँ, विकास के संदर्भ में विभिन्न मत, परिवेश, पोषण एवं लालन–पालन (माता–पिता एवं संरक्षक निरंतर एवं चरणबद्ध विकास,प्रारम्भिक एवं परवर्ती (बाद के) अनुभवों का प्रभाव।

इकाई–4. शारीरिक विकास **अंक–10**

वृद्धि एवं परिपक्वता – वृद्धि से आशय,परिपक्वता से आशय, गामक विकास – गामक विकास से आशय,गामक विकास की विशेषताएँ, गामक कौशलों का विकास, शारीरिक विकास – शारीरिक विकास के प्रमुख आधार,शारीरिक विकास की अवस्थाएँ, शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक।

इकाई–5. नैतिक एवं संवेगात्मक विकास **अंक–12**

भावनाओं एवं संवेगों का विकास – संवेग क्या हैं?,प्रमुख संवेग,संवेग नियंत्रण,संवेगों के विकास में कारकों की भूमिका,संवेगात्मक विकास के विभिन्न चरण एवं प्रक्रिया,संवेगात्मक विकास की अवस्थाएँ, लगाव का सिद्धांत– लगाव से आशय,जॉन बॉल्बी का लगाव का सिद्धांत,लगाव के घटक,लगाव की विशेषताएँ, व्यक्तित्व – आत्म प्रत्यय/स्वयं,व्यक्तित्व विकास के निर्धारक,ऐरिक्सन का सिद्धांत, नैतिक विकास – पियाजे का सिद्धांत,कोह्लबर्ग का सिद्धांत,कैरोल गिलिगन की विवेचना।

इकाई–6. समाजीकरण **अंक–13**

समाजीकरण का आशय – समाजीकरण के प्रकार, समाजीकरण की प्रक्रिया को प्रभावित करने वाले कारक,समाजीकरण का पारिस्थितिक सिद्धांत, समाजीकरण की विभिन्न संस्थाएँ – परिवार, विद्यालय, समुदाय, मित्रमण्डली, शिक्षक, मीडिया, स्पर्धा, सहयोग और आक्रामकता, जेण्डर की समझ – जेण्डर आधारित समाजीकरण की प्रक्रियाए,जेण्डर का विकास व प्रभावी कारक, समाजीकरण का अस्मिता के विकास पर प्रभाव – लिंग, धर्म, जाति, क्षेत्र आदि, विभिन्न परिस्थितियों में बचपन – अनाथालयों में,फुटपाथों पर, झुग्गी–झोंपडी में, कामकाजी बच्चे आदि, बच्चों पर विपरीत परिस्थितियों के प्रभाव – हिंसा, नशाखोरी, बाल प्रताड़ना, पारिवारिक मनमुटाव आदि, शिक्षक की अपेक्षाओं का विद्यार्थियों पर प्रभाव।

इकाई–7. बच्चों के अध्ययन के तरीके **अंक–10**

बच्चों के अध्ययन के तरीके – आवश्यकता एवं महत्त्व, अवलोकन विधि – अवलोकन के प्रकार,अवलोकन के चरण,अवलोकन की सीमाएँ, साक्षात्कार विधि – साक्षात्कार के प्रकार ,साक्षात्कार की प्रक्रिया के चरण,जिन पियाजे की नैदानिक साक्षात्कार विधि (क्लीनिकल विधि), साक्षात्कार की सीमाएँ, विश्लेषणात्मक/चिंतनात्मक प्रतिक्रिया लेखन (रिलेक्टिव जर्नल) – विश्लेषणात्मक/चिंतनात्मक लेखन की प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण बिन्दु,चिंतनशील/विश्लेषणात्मक चक्र, एनेक्डोटल/उपाख्यानक अभिलेख – एनेक्डोटल अभिलेखों के प्रकार, एनेक्डोटल अभिलेखों के प्रारूप।

Scanned with OKEN Scanner

शैक्षणिक अध्ययन

शिक्षा के उद्देश्य, ज्ञान एवं पाठ्यचर्या

कुल अंक–100

आंतरिक मूल्यांकन–30

बाह्य मूल्यांकन –70

कुल कालांश–140

परिप्रेक्ष्य

शिक्षा के उद्देश्यों को लेकर एकरूपता नहीं हो सकती। सामाजिक पृष्ठभूमि तथा दार्शनिक विचारों के चलते इसमें कई तरह की विभिन्नताएँ देखी जा सकती हैं। ऐसी स्थिति में हर शिक्षक को अपनी विशिष्ट सोच और शैक्षणिक दर्शन का निर्माण करना होता है, और साथ ही अपने विद्यालय और समाज में शिक्षा के उद्देश्यों को लेकर जो विभिन्न मत हैं, उनसे संवाद की तैयारी भी रखनी होती है। इस विषय के अध्ययन से अपेक्षा है कि हमारे भावी विद्यार्थी–शिक्षक अपने उद्देश्य सोच समझकर और समग्रता के साथ निर्धारित कर पाएँगे।

वास्तव में यह किसी भी शिक्षक के लिए आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है लेकिन इसके लिए विद्यार्थी–शिक्षकों को गहन रूप से तैयार करने की आवश्यकता है जिससे वे शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों तथा जीवन मूल्यों पर चिन्तन कर सकें। यह तैयारी तीन तरह के अनुभवों के माध्यम से की जाएगी। पहला– दर्शन शास्त्र और उसके बुनियादी पक्ष व तरीकों से परिचय कराकर। दूसरा– भारतीय व पाश्चात्य दर्शन में जीवन के उद्देश्यों के बारे में प्रचलित धारणाओं की विवेचना करके, आधुनिक विश्व तथा भारत के चिन्तकों के शिक्षा–दर्शन की तुलनात्मक समीक्षा करके। तीसरा– स्वतंत्र भारत के विभिन्न शिक्षा संबंधी नीतिगत दस्तावेजों एवं पाठ्यचर्या दस्तावेजों में निहित शिक्षा दर्शन व शिक्षा के उद्देश्यों को पहचानने का प्रयास किया जाएगा।

इस विषय के अध्ययन का उद्देश्य दर्शन के बारे में विचारों को केवल जानना मात्र नहीं है, बल्कि स्वयं के जीवन दर्शन के बारे में विचार करना तथा उसे परिष्कृत करना है। इसके लिए अपेक्षा है कि दार्शनिक सवालों पर कक्षा में वाद–विवाद हों, चर्चाएँ हों और विद्यार्थी–शिक्षकों को स्वयं के विचारों को व्यक्त करने का अवसर हो। इनके द्वारा वे मतभेदों व वैचारिक विभिन्नता से जूझने का भी अभ्यास कर पाएँगे।

ज्ञान क्या है और इसका हस्तांतरण कैसे हो सकता है, इसको लेकर कई तरह के विचार हो सकते हैं। बच्चों को किस तरह से शिक्षित करें, यह काफी हद तक ज्ञान के बारे में हमारी समझ द्वारा निर्धारित होता है। जैसे क्या ज्ञान तयशुदा व पक्का होता है या ज्ञान वास्तव में केवल समझने का प्रयास है जो सतत परिवर्तनशील है, या क्या ज्ञान केवल हमारे सामाजिक मस्तिष्क की उपज है जिसकी कोई वस्तुनिष्ठता नहीं है? क्या ज्ञान एक ही प्रकार का होता है या कई प्रकार का ? जब हम शिक्षण को विभिन्न विषयों में बांटते हैं जैसे भाषा, गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, कला आदि। तो क्या हम यह मानते हैं कि वे ज्ञान के विभिन्न प्रकार हैं ?

ज्ञान और कुशलता के बीच क्या सम्बन्ध है? मूल्य क्या है ? हम बच्चों में किन मूल्यों को विकसित करें? मूल्य कैसे विकसित होते हैं? ये विषय भी प्रायः सभी शिक्षकों के समक्ष उठते रहते हैं।

क्या ज्ञान विशेषज्ञों व पहले की पीढ़ियों द्वारा अर्जित वैचारिक पूंजी है जिसे बच्चों तक पहुँचाना है; क्या ज्ञान निश्चित जानकारियों का कोई समूह है जिसे दूसरे के मस्तिष्क में बिठाना है; ज्ञान, जानकारी और समझ के बीच क्या सम्बन्ध है, इन प्रश्नों से हर शिक्षक को जूझना होता है। जब हम बच्चों को पढ़ाते हैं हमारा ध्येय क्या है – क्या हम उन्हें कुछ निश्चित तथ्यों एवं सूचनाओं को याद करवाना चाहते हैं या उस विषय के प्रति जिज्ञासु बनाना चाहते हैं या उस विषय से सम्बन्धित समझ उनमें विकसित करने के लिए कुछ अनुभव देना चाहते हैं....? क्या ऐसे अनुभवों से वे सीख जाएँगे ? हम कैसे पता करें कि बच्चे उनको सीख गये हैं या नहीं ? बच्चों का आकलन कैसे हो ? इन सभी प्रश्नों का भी इस विषयान्तर्गत अध्ययन किया जाएगा।

Scanned with OKEN Scanner

उद्देश्य

- शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों के बारे में अपने विचारों को आत्म चिन्तन, पठन और विमर्श के द्वारा परिष्कृत करना।
- शिक्षा के उद्देश्यों में जो विभिन्नताएँ और मतभेद हैं, उनको पहचानना और सुलझाने के लोकतांत्रिक तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- दर्शन शास्त्र के मूल प्रश्नों एवं सोच के तरीकों को समझना।
- कुछ महत्वपूर्ण पाश्चात्य एवं भारतीय चिन्तकों के शिक्षा दर्शन से परिचित होना।
- भारतीय शिक्षा नीति संबंधी दस्तावेजों में निहित शिक्षा दर्शन को समझना।
- ज्ञान के स्वरूप को समझना।
- पाठ्यचर्या और मूल्यांकन के मूलभूत तत्वों पर समझ बनाना।

इकाईवार विवरण

इकाई - 1 शिक्षा के अर्थ एवं उद्देश्य अंक-08

शिक्षा के अर्थ एवं उद्देश्यों से परिचय - शिक्षा का अर्थ, शिक्षा की आवश्यकता क्यों? दर्शन का अर्थ एवं संकल्पना, शिक्षा और दर्शन में सम्बन्ध

ज्ञान की प्रकृति, स्वरूप एवं शिक्षा से संबंध - ज्ञान का अर्थ एवं प्रकृति, ज्ञान की कसौटियाँ, वास्तविक ज्ञान एवं शिक्षा में सम्बन्ध

शिक्षा दर्शन के कुछ विचारणीय बिन्दु / वाद - विभिन्न दार्शनिक वादों का शिक्षा पर प्रभाव

इकाई - 2 विविध परम्पराओं में शिक्षा की अवधारणा अंक-14

वैदिक एवं उपनिषदीय परम्पराएँ - वैदिक परम्परा, उपनिषदीय परम्परा

बौद्ध एवं जैन परम्पराएँ - बौद्ध परम्परा, जैन परम्परा

ईसाई, इस्लामी व सूफी परम्पराएँ - ईसाई परम्परा, इस्लामिक परम्परा एवं सूफी परम्परा

प्राचीन यूनानी परम्परा (सुकरात, प्लेटो व अरस्तू) - सुकरात का शिक्षा दर्शन (470 ई.पू. से 399 ई.पू.), प्लेटो का शैक्षिक दर्शन (428 ई.पू. से 348 ई.पू.), अरस्तू की शैक्षिक मान्यताएं (384–322 ई.पू.)

इकाई - 3 समसामयिक शैक्षिक चिंतन अंक-13

रूसो (फ्रांसीसी) व श्री अरविन्द - अरविन्द घोष एवं मीरा अल्फासा - शिक्षा दर्शन, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षक का स्थान

प्रकृति, कला, जीवन व शिक्षा का संबंध - रवीन्द्रनाथ टैगोर - शिक्षा दर्शन, पाठ्यक्रम, विद्यालय, शिक्षक एवं अनुशासन

श्रम, स्वावलंबन, बुनियादी शिक्षा व नई तालीम - महात्मा गाँधी - शिक्षा दर्शन, स्वावलंबन व शारीरिक श्रम, शिक्षक, शिक्षा का माध्यम, पाठ्यक्रम, बुनियादी शिक्षा / नई तालीम, बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम

दलित शिक्षा - डॉ. भीमराव अम्बेडकर - शिक्षा का दर्शन व स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षक, विद्यार्थी व अनुशासन

जीवन का रहस्य व मौलिक परिवर्तन (ट्रांसफॉर्मेशन) - जे. कृष्णमूर्ति - शिक्षा का दर्शन व स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक एवं अनुशासन, विद्यालय

सर्वांगीण शिक्षा - विवेकानन्द - शिक्षा दर्शन, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षा का माध्यम, शिक्षा का स्वरूप, शिक्षक का स्थान

Scanned with OKEN Scanner

उद्देश्य

- शिक्षा के व्यापक उद्देश्यों के बारे में अपने विचारों को आत्म चिन्तन, पठन और विमर्श के द्वारा परिष्कृत करना।
- शिक्षा के उद्देश्यों में जो विभिन्नताएँ और मतभेद हैं, उनको पहचानना और सुलझाने के लोकतांत्रिक तरीकों के बारे में समझ बनाना।
- दर्शन शास्त्र के मूल प्रश्नों एवं सोच के तरीकों को समझना।
- कुछ महत्त्वपूर्ण पाश्चात्य एवं भारतीय चिन्तकों के शिक्षा दर्शन से परिचित होना।
- भारतीय शिक्षा नीति संबंधी दस्तावेजों में निहित शिक्षा दर्शन को समझना।
- ज्ञान के स्वरूप को समझना।
- पाठ्यचर्या और मूल्यांकन के मूलभूत तत्त्वों पर समझ बनाना।

इकाईवार विवरण

इकाई - 1 शिक्षा के अर्थ एवं उद्देश्य — अंक-08

शिक्षा के अर्थ एवं उद्देश्यों से परिचय – शिक्षा का अर्थ, शिक्षा की आवश्यकता क्यों? दर्शन का अर्थ एवं संकल्पना, शिक्षा और दर्शन में सम्बन्ध

ज्ञान की प्रकृति, स्वरूप एवं शिक्षा से संबंध – ज्ञान का अर्थ एवं प्रकृति, ज्ञान की कसौटियाँ, वास्तविक ज्ञान एवं शिक्षा में सम्बन्ध

शिक्षा दर्शन के कुछ विचारणीय बिन्दु / पक्ष – विभिन्न दार्शनिक मतों का शिक्षा पर प्रभाव

इकाई-2 विविध परम्पराओं में शिक्षा की अवधारणा — अंक-14

वैदिक एवं उपनिषदीय परम्पराएँ – वैदिक परम्परा, उपनिषदीय परम्परा

बौद्ध एवं जैन परम्पराएँ – बौद्ध परम्परा, जैन परम्परा

ईसाई, इस्लामी व सूफी परम्पराएँ – ईसाई परम्परा, इस्लामिक परम्परा एवं सूफी परम्परा

प्राचीन यूनानी परम्परा (सुकरात, प्लेटो व अरस्तू) – सुकरात का शिक्षा दर्शन (470 ई.पू. से 399 ई.पू.), प्लेटो का शैक्षिक दर्शन (428 ई.पू. से 348 ई.पू.),अरस्तू की शैक्षिक मान्यता (348–322 ई.पू.)

इकाई-3 समसामयिक शैक्षिक चिंतन -1 — अंक-13

समग्र (इंटीग्रल) व फ्री प्रोग्रेस – अरविन्द घोष एवं मीरा अल्फसा – शिक्षा दर्शन, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, शिक्षक का स्थान

प्रकृति, कला, जीवन व शिक्षा का संबंध – रवीन्द्रनाथ टैगोर – शिक्षा दर्शन, पाठ्यक्रम, विद्यालय, शिक्षक एवं अनुशासन

श्रम, स्वावलंबन, बुनियादी शिक्षा व नई तालीम – महात्मा गाँधी – शिक्षा दर्शन, स्वावलंबन व शारीरिक श्रम, शिक्षक, शिक्षा का माध्यम : मातृभाषा, बुनियादी शिक्षा / नई तालीम, बुनियादी शिक्षा का पाठ्यक्रम

दलित शिक्षा : डॉ. भीमराव अम्बेडकर – शिक्षा का दर्शन व स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या, शिक्षक, शिक्षार्थी व अनुशासन

जीवन का तात्पर्य व मौलिक परिवर्तन (ट्रांस्फार्मेशन) – जे. कृष्णमूर्ति – शिक्षा का दर्शन व स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षक एवं अनुशासन, विद्यालय

सर्वांगीण शिक्षा – विवेकानन्द – शिक्षा दर्शन, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण प्रक्रिया, शिक्षा का माध्यम, शिक्षा का स्वरूप, शिक्षक का स्थान

Scanned with OKEN Scanner

इकाई – 4 समसामयिक शैक्षिक चितंन – भाग 2 **अंक–13**

उन्मुक्त बाल शिक्षाः रूसो – सामाजिक परिदृश्य, शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम शिक्षण की विधियाँ, शिक्षक एवं शिक्षार्थी

सीखने में अनुभव का समावेश : जॉन डीवी – सामाजिक परिदृश्य, शिक्षा का स्वरूप, शैक्षिक दर्शन, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण की विधियाँ, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अनुशासन

स्कूल की अवधारणा पर वैकल्पिक नज़रिया : इवान इलिच – सामाजिक परिदृश्य, शैक्षिक दर्शन, शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षण की विधियाँ, शिक्षक, शिक्षार्थी एवं अनुशासन, विद्यालय

उत्पीड़ितों का शिक्षाशास्त्र : पाउलो फ्रेरे – सामाजिक परिदृश्य, शैक्षिक दर्शन, शिक्षण की विधियाँ, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षक–शिक्षार्थी संबंध

व्यक्तित्व निर्माण में श्रम और सामूहिकता : मकारेन्को– सामाजिक परिदृश्य, शिक्षा का स्वरूप, शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण की विधियाँ,शिक्षक एवं शिक्षार्थी

इकाई–5 पाठ्यचर्या के दार्शनिक आधार **अंक–10**

पाठ्यचर्या का अर्थ एवं उसकी व्यापकता – पाठ्यचर्या की अवधारणा, पाठ्यचर्या की प्रक्रिया तथा इसके सोपान,पाठ्यचर्या के विभिन्न पहलू

शिक्षा के उद्देश्य व पाठ्यचर्या में अन्तर्संबंध

पाठ्यचर्या के निर्धारक तत्त्व – पाठ्यचर्या निर्माण में निहित मूल मान्यताएँ व सिद्धांत, पाठ्यचर्या के आधार

प्रत्यक्ष व परोक्ष पाठ्यचर्या – प्रत्यक्ष / वास्तविक पाठ्यचर्या, छुपी / परोक्ष पाठ्यचर्या, पाठ्यचर्या के विभिन्न स्वरूपों में संबंध, पाठ्यचर्या निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक

पाठ्यचर्या निर्धारण के विभिन्न स्तर

इकाई – 6 सीखने व मूल्यांकन के दार्शनिक आधार **अंक–12**

सीखने का तात्पर्य एवं विभिन्न तरीके– सीखने के तात्पर्य का दार्शनिक आधार, सीखने के विभिन्न तरीके

मूल्यांकन, मापन, आकलन की समझ–सीखने के संदर्भ में– मूल्यांकन और मापन की अवधारणा, आकलन (आकलन क्या, किसका, कैसे), आकलन संबंधी सूचनाओं का इस्तेमाल, मूल्यांकन / आकलन में बदलाव का आधार

आकलन के विभिन्न तरीके – स्व–आकलन, समूह आकलन, सहपाठियों द्वारा आकलन, व्यक्तिगत आकलन

बच्चों को किसी कक्षा में नहीं रोके जाने का औचित्य

सामाजिक स्तरीकरण में मूल्यांकन की भूमिका

शिक्षक की जवाबदेही व शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता का मूल्यांकन– बच्चों के मूल्यांकन के आधार पर – शिक्षक की जवाबदेही, शिक्षाव्यवस्था की गुणवत्ता का मूल्यांकन, मूल्यांकन के परिणामों के आधार पर शिक्षा व्यवस्था की गुणवत्ता में सुधार के प्रमुख क्षेत्र।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा – सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के महत्त्वपूर्ण पदों की अवधारणा– सततता, व्यापकता, आकलन, मूल्यांकन, सी.सी.ई. आवश्यकता एवं महत्त्व, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया एवं उपयुक्त शब्दावली

Scanned with OKEN Scanner

समसामयिक अध्ययन

भारतीय समाज और शिक्षा

कुल अंक–100

आंतरिक मूल्यांकन–30

बाह्य मूल्यांकन–70

कालांश–140

परिप्रेक्ष्य

यह विषय प्रमुख रूप से भारतीय विद्यालयी शिक्षा के सामाजिक संदर्भ को समझने में मदद करेगा। भारत अनेक जाति, जनजाति, धर्म, भाषा और संस्कृति के लोगों का निवास स्थान है। विविध पृष्ठभूमि से जो बच्चे विद्यालय में आते हैं, वे अपने समुदाय का अनुभव व ज्ञान भी साथ लाते हैं। हमारी शिक्षा व्यवस्था के सामने यह चुनौती बन जाती है कि वह इस सम्पदा का उपयोग किस प्रकार करती है और उन सभी समुदाय के बच्चों को कक्षा में सम्मानजनक स्थान किस हद तक दे पाती है। हमारे समाज में केवल विविधता ही नहीं बल्कि बहुत असमानता, शोषण और भेदभाव व्याप्त है। क्या हमारी शिक्षा व्यवस्था इसे बदलने में मददगार हो सकती है या फिर इन्हें बनाए रखने का एक साधन मात्र बनकर रह जाएगी ? अगर हमारे शिक्षकों को सामाजिक बदलाव में अपनी भूमिका अदा करनी है तो निश्चय ही उन्हें वर्तमान में व्याप्त सामाजिक विषमताओं और उनके तौर तरीकों को गहनता से समझना होगा।

सांस्कृतिक विभिन्नता तथा जटिल अर्थव्यवस्था वाले समाज में सार्वभौमिक शिक्षा की क्या भूमिका हो सकती है ? क्या सबके लिए एक ही तरह की शिक्षा उपयोगी होगी ? या फिर अलग–अलग श्रेणी या समुदाय के लिए अलग–अलग शिक्षा हो ? ऐसे में हमारा समानता और राष्ट्रीय एकता का आदर्श कैसे प्रभावित होगा ? इन द्वंद्वों के बीच एक शिक्षक व पाठ्यक्रम निर्माता को अपनी राह तय करनी होती है।

हमारा संविधान जो हमारे राष्ट्र की दिशा निर्धारित करता है, उसमें निहित आदर्श हमें सामाजिक बदलाव के लिए प्रेरित करते हैं और हमारे शासन तंत्र को इसके लिए निर्देशित करते हैं। एक शिक्षक के लिए इन आदर्शों व उद्देश्यों को समझना बहुत आवश्यक होगा।

हमारे देश के लोक शिक्षण का इतिहास बहुत पुराना है। स्कूली शिक्षा की व्यवस्था औपनिवेशिक काल में प्रारंभ हुई। यह स्कूली शिक्षा व्यवस्था आज तक हमारे शिक्षा तंत्र में व्याप्त हैं। औपनिवेशिक काल में स्कूली शिक्षा व्यवस्था, राष्ट्रीय चिंतन, संवैधानिक उद्देश्य, और आधुनिक विकास–इन चारों से परिचित होना तथा उनके आपसी सम्बन्धों के बारे में समझ बनाना एक शिक्षक के लिए अति आवश्यक है।

उद्देश्य

- अपने समाज में मौजूदा विभिन्नताओं को समझना तथा उनके महत्त्व को समझते हुए उन्हें शिक्षण में संसाधन के रूप में देखना।
- सामाजिक स्तरीकरण से सम्बन्धित विभिन्न अवधारणाओं व प्रक्रियाओं जैसे विषमता, बहिष्कार, भेदभाव, शोषण आदि को समझना।
- विविधता और स्तरीकरण के संदर्भ में सार्वभौमिक शिक्षा के उद्देश्यों को समझना।
- संविधान की प्रस्तावना तथा मौलिक अधिकारों में निहित राष्ट्रीय मूल्यों व उद्देश्यों की विवेचना कर पाना।
- आधुनिक भारत के विकास के मुख्य पक्षों को देखते हुए उसमें सार्वजनिक शिक्षा के महत्त्व को समझना।
- पूर्व–आधुनिक भारत में सामान्य शिक्षा व्यवस्था, औपनिवेशिक व्यवस्था की स्थापना तथा उसके नीति सम्बन्धित विवाद, और राष्ट्रवादी समालोचना को समझना।
- उपर्युक्त सभी बातों की प्रासंगिकता अपने समाज के संदर्भ में देख पाना और उससे अपने लिए कुछ शैक्षणिक उद्देश्य निर्धारित कर पाना।

इकाईवार विवरण

इकाई-1. भारतीय समाज में विविधता, असमानता व भेदभाव **15-अंक**

समाज में विविधता – (रंग–रूप, संस्कृति, भाषा, धर्म) विविधता का महत्त्व और चुनौती –

राजस्थान में विविधता, बचपन में विविधता, विविधता – संसाधन भी और चुनौती भी

विविधता, विषमता, भेदभाव और बहिष्कार – अवसर एवं वंचना, बहिष्कार एवं शोषण, सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप

सामाजिक स्तरीकरण के सिद्धान्त (मार्क्स और वेबर)– सामाजिक स्तरीकरण के बारे में मार्क्स, सामाजिक स्तरीकरण के बारे में वेबर

इकाई-2. शिक्षा की चुनौतियाँ - अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति **15-अंक**

जाति व्यवस्था और दलित शिक्षा – वर्ण और जाति,जाति व्यवस्था में निरन्तरता एवं परिवर्तन, दलित समुदाय और शिक्षा

जनजातीय समुदाय – जनजातीय समुदायों का क्षेत्रीय विस्तार,जनजाति और मुख्यधारा, जनजातीय शिक्षा की समस्याएँ और योजनाएँ।

इकाई 3. जेंडर, बालिका शिक्षा, निर्धन वर्ग एवं अल्पसंख्यक - शिक्षा की चुनौती **15-अंक**

जेंडर और पितृसत्ता की समझ– जेंडर क्या है,जेंडर का समाजीकरण, पितृसत्ता, बालिका शिक्षा, चुनौतियाँ और सम्भावनाएँ, गरीबी और शिक्षा – बालमज़दूरी और पलायन की समस्या, अल्पसंख्यक समुदाय और शिक्षा।

इकाई-4. संवैधानिक उद्देश्य और मौलिक अधिकार **10-अंक**

भारतीय संविधान की प्रस्तावना और उसकी विवेचना – भारत को एक गणराज्य के रूप में स्थापित करना, भारत के लोगों को न्याय, स्वतंत्रता और समता प्राप्त कराने तथा आपस में बन्धुता बढ़ाने के लिए, भारतीय संविधान में नागरिकों के मौलिक अधिकार – समता का अधिकार, स्वतंत्रता का अधिकार, शोषण के विरुद्ध अधिकार, धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार, सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकार, संवैधानिक उपचारों का अधिकार, एक तुलना– दक्षिण अफ्रीका और भारत, भारतीय संविधान में नागरिकों के मौलिक कर्तव्य, भारत का संघीय ढाँचा तथा शिक्षा व्यवस्था – संघीय शासन व्यवस्था,भारत में संघीय व्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था की ज़िम्मेदारी, संविधान में भाषा और राज भाषा।

इकाई--5. औपनिवेशिक काल में शिक्षा का इतिहास **15-अंक**

अंग्रेजी शासन से पूर्व देश में शैक्षिक व्यवथ्था, शिक्षा नीति पर बहस–मैकाले और प्राच्यवादी, आधुनिक शिक्षा का प्रसार–भारतीयों की भूमिका, हैदर कमीशन और दलित शिक्षा के मुद्दे, स्वतंत्रता के समय तक शिक्षा का विस्तार और प्रभाव।

इकरई 6 औपनिवेशिक शिक्षा की समालोचना और वैकल्पिक प्रयोग-

आर्य समाज : आँग्ल–वैदिक विद्यालय तथा गुरुकुल कांगड़ी – दयानन्द एँग्लो–वैदिक स्कूल (डी.ए.वी.स्कूल), गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, दारुल उलूम, रवीन्द्रनाथ टैगोर : शिक्षा दर्शन तथा प्रयोग – शिक्षा दर्शन, श्रीनिकेतन, शान्ति निकेतन, गाँधीजी : शिक्षा दर्शन तथा नई तालीम – गाँधीजी का शिक्षा दर्शन, गाँधीजी की बुनियादी शिक्षा योजना (वर्धा शिक्षा योजना), बुनियादी शिक्षा का विकास (1937–47), आजाद भारत में बुनियादी शिक्षा, गाँधी–टैगोर शिक्षा संवाद – मातृभाषा में शिक्षण और अँग्रेजी की भूमिका, परीक्षोन्मुख शिक्षा बनाम प्रकृति से शिक्षण,उत्पादक कार्य एवं शिक्षण, संगीत और संस्कृति।

Scanned with OKEN Scanner

भाषा, संज्ञान और समाज : पाठ्यचर्या के संन्दर्भों में

कुल अंक–50

आंतरिक मूल्यांकन–15

बाह्य मूल्यांकन–35

कुल कालांश–80

परिप्रेक्ष्य

भाषा, मनुष्य का एक महत्त्वपूर्ण सृजन है। सामान्यतः भाषा को सम्प्रेषण के साधन के रूप में देखा जाता है। दरअसल इस बात पर विचार करना आवश्यक है कि सम्प्रेषण की विषयवस्तु का सृजन किस प्रकार होता है। भाषा अर्जित करने की क्षमता मनुष्य में जन्मजात होती है, लेकिन भाषा सृजन, सायास मानसिक प्रक्रियाओं के द्वारा किया जाता है। भाषा को सम्प्रेषण के रूप में समझने से महत्त्वपूर्ण, भाषा– सृजन की प्रक्रियाओं को समझना है क्योंकि इसी समझ के सहारे भाषा की भूमिका तथा भाषा सीखने के तरीकों को विकसित किया जा सकता है।

भाषा के कारण ही मनुष्य उस स्थिति को हासिल कर पाता है जिसमें वह वस्तुओं और प्राणियों की अनुपस्थिति में भी उनके बारे में विचार कर सकता है। भाषा के कारण ही मनुष्य अपने मन की बात को किसी और को बता पाता है। भाषा के कारण ही मनुष्य दूसरे को छुए बिना भी उससे मदद मांग सकता है तथा दूसरे की मदद कर सकता है।

भाषा एक माध्यम है, जिसका उपयोग समाज कई तरह के कामों को करने के लिए करता है। समाज विभिन्न प्रकार के सामाजिक विभाजनों को भाषा के द्वारा अभिव्यक्त करता है। समाज, भाषा का उपयोग इस प्रकार के विभाजनों को ठोस रूप प्रदान करने में करता है। ये विभाजन जेंडर, जाति, क्षेत्र, धर्म आदि के आधार पर किए जाते हैं। इस विषय वस्तु के माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षक भाषा के जरिए बनाए जाने वाले शक्ति संबंधों के बारे में समझ बनाएँगे।

भाषा सामाजिक तत्त्व है । समाज में अनेक तरह के भेद तथा असमानताएँ पाई जाती हैं। इनमें से अनेक असमानतओं को विभिन्न सामाजिक समूह सायास तौर पर बनाए रखते हैं। इसी कारण भाषा में वर्चस्व तथा प्रतिरोध के स्वर बराबर सुनाई पड़ते हैं। समाज कोई सजातीय समूह नहीं है। इसीलिए भाषा में भी सजातीयता का तत्त्व सर्वत्र नहीं मिलता।

इस पाठक्रम द्वारा विद्यार्थी–शिक्षक यह समझ बनाएँगे कि भाषा से जेंडर, (स्त्रीत्व तथा पुरुषत्व के आधार पर सामाजिक विभेद) जाति, क्षेत्र, वर्ग, धर्म आदि के आधार पर परिलक्षित होने वाली असमानता को कैसे रोका जा सकता है।

विद्यार्थी–शिक्षक यह समझ बनाएँगे कि भाषा और लिपि के बीच के संबंध प्राकृतिक है या मानवीय वे यह भी समझ सकेंगे कि भाषा और लिपि में से किसका विकास पहले होता है? क्या किसी भाषा को एक से अधिक लिपियों में लिखा जा सकता है? क्या किसी लिपि में एक से अधिक भाषाओं को लिखा जा सकता है?

बच्चे भाषा को अनेक काम में लेते हैं। उनमें से एक काम सम्प्रेषण का भी है। वे सवाल पूछते हैं, आदेश देते हैं, विश्लेषण करते हैं, कल्पना करते हैं, वस्तुओं और प्राणियों से जुड़ते हैं, विचार करते हैं आदि। इन सभी कामों के लिए बच्चे भाषा का प्रयोग करते हैं। विद्यालय में इनके लिए अवसर उपलब्ध करवाना, स्कूली तंत्र तथा शिक्षक की साझा जिम्मेदारी होती हैं। इस सन्दर्भ में इस विषय वस्तु के माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षक में दो क्षमताओं के विकास की उम्मीद है। पहली, वे यह समझ पाएँगे की बच्चे भाषा से कौन–कौन से काम लेते हैं तथा दूसरी, वे बच्चों के भाषा प्रयोग की क्षमता को बढ़ाने के तरीकों का उपयोग करना सीख पाएंगे। विद्यालय में भाषा का उपयोग दो रूपों में किया जाता है। एक विषय के रूप में भाषाओं का अध्ययन करके तथा दूसरा भाषाओं को अन्य विषयों का अध्ययनं करने हेतु माध्यम के रूप में। एक में, वह स्वयं उद्देश्य होती हैं और दूसरे में उद्देश्य का माध्यम।

बहुभाषिकता हर समाज की विशेषता होती है। समाज में भाषाएँ आपसी मेल–जोल से विकसित होती हैं। भाषाओं में हुए सहज मेल–जोल के प्रति स्वीकृति का दृष्टिकोण भाषा को बोझिल होने से बचाता है। बच्चों की भाषा में निहित बहुभाषिकता के गुण को कक्षा में शिक्षा शास्त्रीय स्रोत के रूप में उपयोग किया जाना चाहिये।

Scanned with OKEN Scanner

भाषा मानवीय ज्ञान का महत्त्वपूर्ण स्रोत है। इसकी मदद से मनुष्य ज्ञान का सृजन, भण्डारण, सम्प्रेषण, मूल्यांकन एवं संशोधन करता है। इसी कारण भाषा का स्थान विद्यालयी शिक्षा के पूरे पाठ्यक्रम में सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है। शिक्षक बनने की इच्छा रखने वाले किसी भी व्यक्ति के लिए जरूरी है कि वह इस तथ्य को समझें और शिक्षक के रूप में इसका उपयोग करें।

उद्देश्य

- विद्यार्थी–शिक्षक भाषा की उत्पत्ति के मूल सिद्धांतों को समझ पाएँगे।
- विद्यार्थी–शिक्षक भाषा की प्रकृति की समीक्षा कर उनके मध्य अंतर्संबंधों को समझ कर विभिन्न स्थितियो में उनका उपयोग कर सकेगें।
- विद्यार्थी–शिक्षक भाषा और समाज के रिश्तों की समीक्षा कर उसका उपयोग कर सकेंगे।
- विद्यार्थी–शिक्षक भाषा में निहित बहुभाषिकता को समझ कर अध्यापन में इसका उपयोग कर सकेंगे।

इकाईवार विवरण

इकाई–1. भाषा, समाज और सत्ता

अंक–20

भाषा और अस्मिता में संबंध, भाषा और जेंडर– समाज में जेंडर, व्याकरण में जेंडर, भाषा और क्षेत्र, भाषा और वर्ग, भाषा और धर्म – भाषायी विविधता और धर्म, धर्म के कारण भाषायी शब्द भण्डार में वृद्धि, लोकोक्तियों और मुहावरों का निर्माण तथा धर्म, भाषा, धर्म एवं जाति, भाषा और लिपि – लिपि, लिपि और भाषा में संबंध एवं अन्तर,ध्वनि संकेत एवं लिपि संकेत में संबंध, क्या भाषा और लिपि में संबंध अलंघनीय है, भाषा और लिपि में संबंध अनिवार्य अथवा मानवीय।

इकाई–2. भाषा की प्रकृति और स्वरूप

अंक–10

भाषा : प्रतीकों की वाचिक व्यवस्था के रूप में,भाषा : नियम संचालित व्यवस्था के रूप में – ध्वनि संरचना, शब्द संरचना, वाक्य संरचना, संवाद संरचना,माध्यम तथा विषय के रूप में भाषाएँ – भाषा : विषय के रूप में, भाषा : माध्यम के रूप में, अवधारणाओं की समझ, तकनीकी, शब्दावली और बच्चे की समझ, भाषा का औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थितियों में उपयोग – भाषा की औपचारिक तथा अनौपचारिक स्थिति, लिखित एवं मौखिक भाषा में अन्तर्संबंध एवं अन्तर – मौखिक भाषा, लिखित भाषा, मौखिक भाषा तथा लिखित भाषा में अंतर।

इकाई–3. भाषा और बहुभाषिकता

अंक–5

समाज और बहुभाषिकता, बहुभाषिकता सीखने–सिखाने के क्रम में।

Scanned with OKEN Scanner

हिन्दी भाषा-शिक्षण और प्रवीणता

कुल अंक –100
आंतरिक मूल्यांकन–40
बाह्य मूल्यांकन–60
कालांश–140

परिप्रेक्ष्य

प्राथमिक विद्यालय में बच्चे समुचित भाषा ज्ञान के साथ आते हैं। वे अपनी बात कहते हैं, दूसरे की कही हुई बात सुन कर समझते हैं और तदनुसार व्यवहार करते हैं। यद्यपि उनकी शब्दावली परिस्थिति, वातावरण, व्यक्तिगत विभिन्नताओं आदि के कारण अलग–अलग होती है। बच्चे के इसी पूर्वार्जित भाषिक ज्ञान को आधार बना कर शिक्षा की नींव रखी जाती है।

भाषा विविध कौशलों का समूह है। सुनना, बोलना, पढना, लिखना–इन भाषा कौशलों के विकास पर भाषा–ज्ञान व सामान्य ज्ञानार्जन आश्रित है। ये कौशल सुनिश्चित करते हैं कि बोला हुआ सुन कर समझा जाए, लिखा हुआ पढ़ कर समझा जाए। हम लिखा हुआ पढ़ कर बोलते हैं, स्वयं सुनते हैं एवं समझते हैं। आरोह–अवरोह के साथ पढ़ना, समझना, तदनुसार हाव–भाव के साथ प्रतिक्रिया करना, विचार करना या प्रश्न पूछना आदि ये सभी काम भाषा के कौशलों पर आश्रित हैं।

अपनी बात दूसरों तक पहुँचाना – यह संप्रेषण है। वक्ता द्वारा किसी भी विषय पर कही गई बात को श्रोता पूर्ण रूप से समझ जाए यही श्रेष्ठ सम्प्रेषण है। कुशल व श्रेष्ठ संप्रेषण के लिए आवश्यक है कि सरल एवं सामान्य भाषा का प्रयोग। कठिन भाषा के प्रयोग से सम्प्रेषण कठिन एवं दुरूह हो जाता है। इस तरह सम्प्रेषक अपना पाण्डित्य तो प्रदर्शित कर देता है, परन्तु उसके द्वारा कही गई बात श्रोताओं तक सही रूप से नहीं पहुँच पाती। भाषा मात्र वक्ता का ही अधिकार नहीं, श्रोता तक अभिप्रेत पहुँचाने का दायित्त्व भी है। जो समझा न पाए वह वक्ता नहीं एवं जो न समझे वह श्रोता नहीं ।

अतः सरल एवं जन सामान्य में प्रचलित भाषा का प्रयोग संप्रेषण कौशल के विकास एवं भाषा की समझ को बढ़ाने में कारगर साबित होते हैं। संप्रेषण कौशल के विकास के लिए भाषिक प्रयोग, व्यवहार, प्रतिभागिता के विपुल अवसर, भाषा की समझ, भाषा की पकड़ के साथ साथ हाव–भाव एवं अशाब्दिक क्रियाओं का भी महत्त्व होता है। अभिव्यक्ति शाब्दिक हो या निःशब्द, मौन हो या मुखर, ध्वन्यात्मक हो या सांकेतिक, इसकी सार्थकता उपयुक्त शब्द चयन, वाक्य रचना एवं हाव–भाव के संयोजन में है।

भाषा कौशलों पर अधिकार व्यक्ति में ग्राह्यता एवं अभिव्यक्ति की योग्यता विकसित करता है। यह चिंतन, मनन, तुलना, आलोचना, विश्लेषण, सृजनात्मकता, निर्णयात्मकता आदि उच्चस्तरीय कौशलों के रूप में भी विकसित होता है। भाषा कौशलों का विकास मात्र प्राथमिक स्तर पर भाषा प्रयोग या अधिगम तक ही नहीं, अपितु जीवन–पर्यन्त होता है। भाषा की कुशलता विद्यार्थी को ज्ञान–क्षेत्र का अध्ययन करने की योग्यता व आत्मविश्वास देती है।

भाषा साधन भी है, और साध्य भी। भाषा मानसिक विकास का कारण भी है और मापदंड भी। भाषा–शिक्षण के पाठ्यक्रम की रूपरेखा में भाषा के प्रायोगिक / व्यावहारिक तथा साहित्यिक रूप दोनों पर ही ध्यान दिया गया है। प्रायोगिक रूप के अन्तर्गत भाषा की वर्तनी, संरचना, व्याकरण आदि निहित हैं वहीं साहित्यिक रूप के अन्तर्गत मुहावरे, लोकोक्तियाँ, विधाएँ, रस, अलंकार, शब्द–शक्तियाँ, रचना, सृजनात्मकता आदि का समावेश है। भाषा–शिक्षक को भाषा के दोनों रूपों के ज्ञान के साथ–साथ उनके शिक्षण की कला में सिद्धहस्त होना चाहिए।

भाषा, विद्यार्थी–शिक्षक को ऐसे अवसर देती है कि वह स्वयं अपने विचारों व भावों को शब्द दे सकें। भाषा–अध्ययन केवल भाषा–शिक्षक का ही दायित्व नहीं अपितु किसी भी विषय के शिक्षक के लिए भी आवश्यक है।

उद्देश्य

- हिन्दी भाषा के विकास, विशेषताओं को समझना ।
- हिन्दी के विविध रूपों एवं उनके महत्त्व को समझना।

Scanned with OKEN Scanner

- प्राथमिक स्तर पर भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों को समझना।
- पढ़ना सीखने–सिखाने की प्रक्रियाओं को समझना।
- पढ़कर समझने की प्रक्रियाओं को समझना।
- विचारों को मौखिक व लिखित रूप में तारतम्यता से व्यक्त करने की प्रक्रियाओं को समझना।
- विद्यार्थी–शिक्षक में भाषायी क्षमताएँ विकसित करना।
- प्राथमिक कक्षाओं के बच्चों में भाषायी क्षमताएँ विकसित करने के लिए गतिविधियाँ बनाना, संचालित करना एवं अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करना।
- भाषायी क्षमताओं के आकलन की समझ बनाना।

इकाईवार विवरण

इकाई–1. हिन्दी भाषा : क्षेत्रीय एवं ऐतिहासिक विविधता

अंक–5

हिन्दी भाषा का विकास, उत्पत्ति एवं विभिन्न रूप – भाषा का उद्‌भव, हिन्दी भाषा का उद्‌भव, हिन्दी भाषा का शाब्दिक अर्थ, हिन्दी भाषा के विविध रूप, हिन्दी भाषा का विकास

मानकीकरण की प्रक्रिया – मानकीकरण की आवश्यकता,मानकीकरण की प्रक्रिया, हिन्दी भाषा के संदर्भ में मानकीकरण के प्रयास,मानकीकरण के पहलू, हिन्दी भाषा : मानकीकरण के रूप, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

राजस्थानी भाषा – हिन्दी भाषा एवं उप भाषाएँ,राजस्थानी भाषा का परिचय,प्रश्न

इकाई–2. हिन्दी भाषा शिक्षण : उद्देश्य और आंकलन

अंक–5

हिन्दी भाषा शिक्षण का महत्त्व – सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास,सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता में सहायक, शिक्षा प्राप्ति का मुख्य आधार, प्रश्न

भाषा शिक्षण के उद्देश्य – भाषा शिक्षण संकेतक कक्षा 1 व 2 भाषा शिक्षण संकेतक कक्षा 3 से 5 भाषा कौशल विकास–गतिविधियाँ, प्रश्न

आकलन - आकलन कक्षा 1 व 2 ,आकलन कक्षा 3 से 5, आकलन प्रक्रिया, प्रश्न

इकाई–3. मौखिक अभिव्यक्ति

अंक–10

मौखिक अभिव्यक्ति का सैद्धान्तिक पक्ष – बच्चों में मौखिक अभिव्यक्ति व उसके विकास के विभिन्न चरण एवं आयाम (घर, बाहरी परिवेश तथा विद्यालय में मौखिक अभिव्यक्ति), मौखिक अभिव्यक्ति के विभिन्न पहलू, विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ, अर्थ पक्ष का विकास (शब्द शक्ति)

विद्यार्थी–शिक्षक की मौखिक क्षमताओं का विकास– स्पष्ट निर्देश देने की क्षमता, अवधारणाओं को मौखिक रूप से समझाना, अपने विचारों को विभिन्न सन्दर्भों में प्रभावी ढंग से विविध रूपों में अभिव्यक्त करने की क्षमता, अपने विचारों को विविध प्रकार के समूहों के सामने प्रस्तुत करने की क्षमता, देखी, सुनी व पढ़ी गई सामग्री को समालोचनात्मक रूप से संक्षिप्त व विस्तृत रूप में अभिव्यक्त करना

विद्यार्थी–शिक्षक में बच्चों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने की क्षमता विकसित करना – बच्चों के साथ शब्दों एवं ध्वनियों से खेलते हुए सार्थक अभिव्यक्ति की ओर ले जाना, बच्चों में अपने विचारों को बेहिचक, स्पष्ट व स्वतंत्र रूप से व्यक्त कर सकने की क्षमता

मौखिक अभिव्यक्ति का आकलन एवं मूल्यांकन –आकलन के तरीके

Scanned with OKEN Scanner

इकाई–4. पढ़ना सीखना

अंक–12

पढ़ना सीखना : सैद्धान्तिक पक्ष – पढ़ना क्या है?,पढ़ने–सीखने के विभिन्न उपागम ,बच्चों द्वारा पढ़ना सीखने के चरण (पठन पूर्व स्थिति, पठन का प्रारम्भिक चरण, संक्रमण काल, द्रुत गति से पठन)

विद्यार्थी–शिक्षक का पढ़कर समझने के कौशल का विकास – वाचन और अर्थ ग्रहण, रचनात्मक साहित्य का पठन (गद्य साहित्य, काव्य, नाट्य साहित्य, आदि), विभिन्न विषयों का पठन और अध्ययन, विद्यालय स्तर की सामग्री का पठन, पाठ्यपुस्तकें एवं बाल साहित्य,सन्दर्भ ग्रन्थों का अवलोकन।

बच्चों में पढ़ने के कौशल के विकास के लिए गतिविधियाँ – बच्चों में पढ़ने के कौशल का विकास, स्वाध्याय की प्रवृत्ति, बाल साहित्य चयन एवं उपयोग,

आकलन एवं मूल्यांकन -- आकलन के तरीके,मूल्यांकन की प्रविधियाँ

इकाई–5. लिखना सीखना

अंक–12

लिखने के कौशल की सैद्धांतिक समझ – लिखित एवं मौखिक अभिव्यक्ति में अंतर,लेखन के विकास के विभिन्न चरण: लेखन पूर्व शुरूआती लेखन, लिखने की दहलीज तथा उचित गति के साथ लिखना

लेखन के विभिन्न पहलू – आकृति, ध्वनि, अर्थ संबंध,लेखन आरंभ करने की योग्यता, शब्द, वाक्य, विरामचिह्न आदि के प्रयोग पर अधिकार, रचना लेखन : कहानी, कविता, संस्मरण

विद्यार्थी–शिक्षकों की लिखित क्षमता का विकास – लिखित अभिव्यक्ति करना, ब्लैकबोर्ड या श्यामपट्ट लिखने के कौशल का विकास, लिखित अभिव्यक्ति में विचारों की क्रमबद्धता, सुने हुए विचारों को संक्षिप्त व विस्तृत ढंग से लिखना

बच्चों के लेखन कौशल का विकास – बच्चों में शुरुआती लेखन विकसित करने के लिए गतिविधियाँ कराने के तरीकों पर समझ बनाना, बच्चों में स्पष्ट लेखन क्षमता का विकास करना, प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखना, बच्चों द्वारा अनुभवों को लिखित अभिव्यक्ति देना, कविता या कहानी नवीन रूप से सृजित करना, बच्चों द्वारा देखी, पढ़ी या सुनी सामग्री को संक्षेप एवं विस्तार से अपने शब्दों में लिखना, तार्किक चिन्तन के आधार पर अपनी बात लिखना एवं सरल रचनाएँ करना, लेखन में चर्चा और बातचीत की भूमिका, कल्पना के आधार पर गीत, कविता, कहानी, चुटकुले आदि लिखना

मूल्यांकन एवं आकलन

इकाई–6. साहित्य के पहलू

अंक–8

साहित्य की विधाएँ : तत्त्व एवं रूप – साहित्य का स्वरूप व विधागत भेद, कहानी, कविता, निबन्ध, नाटक, एकांकी, आलेख, संस्मरण, आत्मकथा, रिपोर्ताज, समाचार लेखन

बाल साहित्य -- बाल साहित्य का अर्थ, बाल साहित्य की विशेषताएँ

भाषा के विकास में बाल साहित्य की भूमिका – बाल साहित्य का बच्चों पर प्रभाव, कक्षा में बाल साहित्य का चयन व प्रस्तुतीकरण

इकाई–7. भाषा की संरचना

अंक–8

वाक्य संरचना -- परिभाषा, वाक्यों के प्रकार, उपवाक्य, त्रुटियाँ, निदान एवं उपचार, प्रश्न

शब्द–रचना – शब्द, अर्थ सम्बन्ध, प्रकार, पद, त्रुटियाँ, निदान व उपचार, प्रश्न

ध्वनि और वर्ण – ध्वनि की परिभाषा, प्रकार, विराम चिह्न, त्रुटियाँ, निदान व उपचार, प्रश्न

Scanned with OKEN Scanner

PEDAGOGY OF ENGLISH LANGUAGE

Maximum Marks: 100
Internal: 40
External: 60
Student Contact Periods: 140

Area of Study: Pedagogy of English

Perspective

English in India is no longer a foreign language or the language of a few elite members of the society. It, on one hand, has emerged as one of the modern Indian languages with a large English-speaking population and as an ex-officio language of the Republic of India. On the other hand, it is still perceived as a status language and language of mobility. As a result, in most states, including Rajasthan, English is now being taught from Class 1.

This paper on the pedagogy of English teaching takes all these aspects into account and follows the perspective of the NCF 2005 focus group paper on the Teaching of English and the teaching of Indian languages. This course focuses on the teaching of English to learners at the primary level (Classes I to V). The aim is also to expose the student-teachers to contemporary practices in English Language Teaching (ELT) while upgrading their personal proficiency.

This course will enable the student-teachers to confidently create a supportive environment which encourages their learners to experiment with language learning. Having gone through the process themselves, the course will also help the student teachers focus on developing an understanding of second language learning.

Design of the Course

- Part A deals with the personal proficiency of the student-teacher.
- Part B, Units 3-5 should be rooted in the school classroom for student-teacher observation, analysis and discussion.
- In these units the maximum time must be spent on discussing specific strategies for teaching English.
- Subject-specific readings are suggested in all units for use in discussion groups enabling a direct relationship between theory and practice.
- Internal student-teacher evaluation deals with the delivery of lessons by student-teachers for peer observation plus the assignments, activities and projects spread across the units under CCE.

Objectives

The student teacher would be able -

- to upgrade their proficiency in English so that they can confidently be a part of the teaching-learning process.
- have a theoretical perspective on English as a 'Second Language' in English Language Teaching (ELT)

Scanned with OKEN Scanner

- to view English as just another modern Indian language and not a status language
- to grasp the principles and practice of teaching plans (course, unit and lesson) for effective teaching of English
- to develop classroom management skills, procedures and techniques for teaching the English language
- to examine and develop resources and materials for use with young learners for language teaching and testing
- to examine issues in language assessment and their impact on classroom teaching

Units of Study

English - PART A External Marks - 5 Internal - 30

UNIT 1 LISTENING AND SPEAKING

1. Listening with comprehension
2. Organising listening and speaking activities (rhymes, songs, role play, dramatisation, etc.)

UNIT 2 READING COMPREHENSION

1. Enhancing reading comprehension
2. Differentiating types of texts - Descriptive passages, Narrative passages, Expository passages, Argumentative passages
3. Local and global comprehension- Local comprehension , Global comprehension

UNIT 3 ENHANCING WRITING ABILITIES

1. Enhancing writing abilities

   1.1 Identifying a topic sentence

   1.2 Arranging sentences in a logical order

   1.3 Usage of linking words and phrases
2. Different forms of writing - Letters (personal, invitation, application, complaint and permission), Messages, Notices, Posters

UNIT 4 ENHANCING OVERALL PERSONAL PROFICIENCY

1. Enhancing overall proficiency

1.1 Word categorisation; Word meanings / word meanings in different contexts

1.2 Formation of simple sentences

1.3 Understanding main points of clear standard input on familiar matters regularly encountered in work, school, leisure, etc.

1.4 Dealing with most situations likely to arise whilst travelling in an area where the language is spoken

1.5 Producing simple connected text on topics, which are familiar, or of personal interest

1.6 Describing experiences and events, dreams, hopes and ambitions giving reasons and explanations for opinions and plans

PART B

UNIT 1 ENGLISH LANGUAGE IN INDIA

1. A historical view, nature and present context of English as a Second Language in India
2. The multi-lingual nature of India -Issues of learning English in a multi-lingual / multi-cultural society
3. The existing status of English language teaching in India, NCF 2005 and the teaching of English , NCERT position paper on teaching English

UNIT 2 STRUCTURE OF ENGLISH LANGUAGE

1. Functions of language
2. Rules at sound level - basic sound patterns - Basic sound-letter relationship (e.g.cat / path / mate; call / cell),Monothong vowel sound patterns (e.g. pen, pan, pin, pun),Consonant clusters (e.g. tr, cl, st, str)]Comparison with sound patterns in HindiDifference between vowel letters and vowel sounds; consonant letters and consonant sounds
3. Expressions -

   3.1 Gesticulation and facial expression to convey meaning

   3.2 Oral expression while reciting and reading to make meaning

   3.3 Written expression, phrases, descriptors
4. Teaching Grammar to children

   4.1 Theories connected to grammar teaching-learning

   4.2 Simple sentence construction

   4.3 Basic language / grammar aspects: Naming words and types of nouns; Doing words; Simple present and past / present and past continuous verb forms; Verbs expressing future (will / be going to); Auxiliaries; Describing words (adjectives); Articles; Connectors (and, or, but); Possessive forms of pronouns (my, you, his/her); this, that, these, those as determiners and it and there as empty subjects; Question words (who, what, when, which, etc.); Punctuation marks (full stop, comma, question mark)

   4.4 Grammar teaching strategies (activities / tasks / games)

Scanned with OKEN Scanner

5. Basics of handwriting
   5.1 Pre-writing patterns / letter sizing.
   5.2 Preparing and presenting five activities for three different stages

UNIT 3 TEACHING STRATEGIES AND SKILLS

1. Listening to children's voices: how to encourage children to learn a new language
2. Role of a teacher in an English language class
3. Understanding the concerns with regard to the education of children with special needs
4. Materials and activities to facilitate learning
   4.1 Listening

   How we comprehend spoken language; Suggested strategies and activities; Examples of types of poetry used in the different primary classes, their conduct, purpose

   4.2 Speaking

   Seeing children's talk as valuable; Reducing the teacher's talk-time in the classroom and free articulation: Story-telling, Talk on given theme for 2 minutes (individual), Simple instructions (Sit down. Come here. May I have my book, please?), and formulaic usage (This is my book. What is the time? I get up early in the morning.), Conversation - dialogue (pair and group); Using pair-work and group-work meaningfully to encourage speaking and participation

   4.3 Reading

   Early literacy and whole-language development; Understanding stages of reading development; Purposes of reading; Kinds of texts and genres: why and how they help

   4.4 Writing

   Picture composition, narration and description; The relationship between observation, thoughts and writing; Elements of writing; Types of writing forms; Observation and discussion on problems of getting children to write; Report on possible solutions to getting children to write
5. Some integrated activities for the classroom

   Poems / rhymes, songs, charts, story-telling, role play, word walls, teaching pronunciation, rhythm, stress and intonation, reading

UNIT 4 PLANNING AND MATERIALS DEVELOPMENT

1. Integrating the teaching of English with other subjects
2. Understanding and analysing the syllabus guidelines for Rajasthan primary level
3. Need of a teaching plan
4. Preparation of low cost teaching aids
5. Using the classroom as a resource

Scanned with OKEN Scanner

UNIT 5 CONTINUOUS AND COMPREHENSIVE EVALUATION

1. Meaning and purpose of CCE
2. Tools and techniques of CCE: Portfolios; Anecdotal records; Checklists; Rating scales; Observation; Assignments; Projects
3. Assessing language skills
   - 3.1 Assessing listening
   - 3.2 Assessing speaking
   - 3.3 Assessing reading
   - 3.4 Assessing writing
4. Assessing handwriting and spelling development
5. Attitude towards errors and mistakes

EVALUATION SCHEME

Internal Assessment - 40 Marks

First Test - 13 Marks	Part A, Units 1-2 + Part B, Units 1-3
Part A, Unit 1 (4 Marks) + Part A, Unit 2 (5 Marks) + Part B, Unit 1 (1 Mark) + Part B, Unit 2 (1 Mark) + Part B, Unit 3 (2 Marks)	
Second Test - 12 Marks	Part A, Units 3-4 + Part B, Units 4-5
Part A, Unit 3 (4 Marks) + Part A, Unit 4 (4 Marks) + Part B, Unit 4 (2 Marks) + Part B, Unit 5 (2 Marks)	
Activities (Throughout the Year) - 15 Marks (Part A - 13 Marks + Part B - 2 Marks)	

External Assessment - 60 Marks

Scanned with OKEN Scanner

गणित शिक्षण

कुल अंक–100

आन्तरिक मूल्यांकन–40

बाह्य मूल्यांकन–60

[illegible]–140

परिप्रेक्ष्य

गणित हमारे विद्यालयों की पाठ्यचर्या का अनिवार्य विषय है। प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों से अपेक्षा की जाती है कि वे आसानी से कक्षा एक से लेकर कक्षा पाँच तक के विद्यार्थियों को गणित पढ़ा सकते हैं। इस अपेक्षा में अक्सर इस बात को नजर अंदाज कर दिया जाता है कि शिक्षक जिन विषयों के शिक्षण में महारत को महसूस करते हैं तथा उनकी स्वयं की शिक्षा के दौरान उन्होंने जिन विषयों का चयन किया था। अच्छा शिक्षक तैयार करने की प्रक्रिया में एक विद्यार्थी-शिक्षक के लिए उसका प्रशिक्षण अहम मुद्दा है।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उद्देश्य

- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]
- [illegible]

इकाईवार विवरण

इकाई - 1. गणित की प्रकृति, इतिहास तथा संस्कृति का समीक्षात्मक अवलोकन अंक - 5

[illegible]

गणितीय ज्ञान निर्माण की विविध परम्पराएँ – गणित क्या हैं?, गणितीय ज्ञान की रचना क्या गणितीय ज्ञान अनोखा होता है?, विद्यालयी गणित की प्रकृति एवं स्वरूप

दैनिक जीवन में गणित – आम लोगों का गणित, गणितज्ञों द्वारा प्रयोग किया जाने वाला गणित गणितज्ञों एवं आम लोगों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले गणित के तरीकों में अंतर, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में गणित

विद्यालय में प्रयोग में लाया जाने वाला गणित – संख्या संक्रियाएँ, गणित की व्यापकता एवं बहुलता

इकाई–2. गणित सीखना -सिखाना.शिक्षण सिद्धान्त तथा शिक्षण विधियाँ **अंक–12**

गणित सीखने के विभिन्न सिद्धान्तों से परिचय – शिक्षण सिद्धान्त – बच्चों के गणित सीखने के संदर्भों पर आधारित

गणित शिक्षण की विधियाँ – विश्लेषण एवं संश्लेषण विधि, आगमन व निगमन विधि, खेल विधि, समस्या समाधान विधि

व्यवहारवाद से रचनावाद तथा सामाजिक रचनावाद – गणित सीखने का व्यवहारवादी नजरिया, गणित शिक्षण में रचनावादी नजरिये, पियाजे का संख्यात्मक अवधारणा सीखने का सिद्धान्त

गणित सीखने–सिखाने के तरीकों पर हुए कार्यों से परिचय – गणित शिक्षण की दिशा में हुए नये प्रयास, आर.एम.ई. (Realistic Approach to Mathematics Education) से परिचय

गलतियों का विश्लेषण – प्राथमिक कक्षाओं में गणित शिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकरणों में आने वाली प्रमुख समस्याएँ तथा उनके कारण, सवालों को हल करने के दौरान बच्चों द्वारा की जाने वाली सामान्य गलतियाँ था इनके कारणों का विश्लेषण

शिक्षण अधिगम योजना

इकाई–3. विषयवस्तु आधारित ज्ञान

अंक–25

संस्कार और मानक विधियां : गिनना तथा गिनने में बच्चों को आने वाली कठिनाइयाँ, संख्याएँ क्रमसूचक (Ordinality) तथा मात्रासूचक (Cardinality) के रूप में और संख्या रेखा, विस्तारित रूप और स्थानीय मान, सवाल हल करने के बच्चों के अपने तरीके, संख्याओं से संबंधी आधारभूत संक्रियाएँ, जोड़ और बाकी के अलग–अलग अर्थ, जोड़–बाकी के सवालों को हल करने में उपयोग में ली जाने वाली विधियों की समीक्षा, संख्याओं से संबंधी आधारभूत संक्रियाएँ, गुणा और भाग के अलग–अलग अर्थ, गुणा पर आधारित सवाल हल करने के लिए उपयोग में ली जाने वाली विधियों की समीक्षा, भाग पर आधारित सवाल हल करने में उपयोग में ली जाने वाली विधियों की समीक्षा, लघुतम समापर्तक और महत्तम समापर्तक।

भिन्न, दशमलव और प्रतिशत : भिन्न की अवधारणा का परिचय, भिन्न की अवधारणा के विभिन्न सन्दर्भ, भिन्न के अलग–अलग रूप, भिन्न की अवधारणा सीखने और सिखाने में आने वाली मुश्किले और उनके कारण, भिन्न और संख्या रेखा, भिन्न तथा दशमलव संख्याओं में समानता एवं अंतर, प्रतिशत की अवधारणा।

मापन और समय–सारणी : मापन की प्रक्रिया तथा इकाईकृत करने का विचार, धारिता एवं आयतन, भारमापन, क्षेत्रफल, समय–सारणी विद्यालय, विद्यालय गतिविधियों की समय सारणी

कोण और आकार, बनावट तथा स्थानिक समझ : कोण की अवधारणा, कोण के प्रकार और कोण की रचना, स्थानिक समझ तथा इससे संबंधित अवधारणाएँ।

आँकड़ों का प्रबन्धन और पैटर्न : आँकड़े, आंकड़ों के प्रकार तथा उनका संग्रहण, आंकड़ो का सारणीयन, आंकड़ो का प्रदर्शन पैटर्न की अवधारणा और प्रकार, पैटर्न को पहचानना तथा उसे आगे बढ़ाना।

इकाई–4. गणित शिक्षण सबके लिए

अंक–5

गणित सबके लिए – जेण्डर और गणित शिक्षा, सामाजिक–आर्थिक रूप से वंचित वर्ग और गणित शिक्षा, पहली पीढ़ी के शिक्षार्थी एवं गणित शिक्षा

गणित शिक्षक की भूमिका तथा महत्त्व

Scanned with OKEN Scanner

विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के संदर्भ में गणित शिक्षण

विद्यालय से वंचित बच्चों के संदर्भ में गणित शिक्षण

इकाई–5. पाठ्यचर्या तथा मूल्यांकन **अंक–10**

गणित शिक्षण के लक्ष्य तथा उद्देश्य –

एन.सी.एफ. 2005, गणित का आधार पत्र तथा आर.टी.ई. 2009 के परिप्रेक्ष्य में गणित शिक्षण के लक्ष्य तथा उद्देश्य –

प्राथमिक कक्षाओं हेतु गणित पाठ्यचर्या के महत्त्वपूर्ण तत्त्व – प्राथमिक कक्षाओं में गणित शिक्षण हेतु पाठ्यचर्या तथा इसके तत्त्व

मूल्यांकन – मूल्यांकन के उद्देश्य, बच्चों के सीखने की प्रक्रियाओं का मूल्यांकन – उद्देश्य तथा तरीके, प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाए जाने वाले गणित के संदर्भ में सतत एवं व्यापक

Scanned with OKEN Scanner

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण

कुल अंक–100

आंतरिक मूल्यांकन–40 अंक

बाह्य मूल्यांकन –60 अंक

कुल कालांश–140 अंक

परिप्रेक्ष्य

पर्यावरण अध्ययन, डाइट/B.S.T.C. (D.El.Ed.) पाठ्यक्रम में एक अनिवार्य विषय माना गया है, जिसे प्रथम वर्ष में पढ़ाया जाना निर्धारित है। इस विषय की पाठ्यक्रम में अनिवार्यता को किसी तर्क की जरूरत नहीं है क्योंकि स्पष्ट है कि बच्चे स्वाभाविक तौर पर अपने आस–पास की दुनिया के संपर्क में आते हैं और रोजाना ही उनके अनुभवों में नए अनुभव और उनकी उत्सुकताओं में नए सवाल जुड़ते रहते हैं। रोजाना चलने वाली इस प्रक्रिया को कक्षा में स्थान देने से विद्यालयी शिक्षा का दैनिक जीवन से जुड़ाव तो बनता ही है, बच्चों को उन अनुभवों को एक विशेष संदर्भ में देखने, जोड़ने और नए ज्ञान के निर्माण के लिए मंच भी मिलता है।

उल्लेखनीय है कि पर्यावरण अध्ययन विषय को लेकर समझ लगातार एक सी नहीं रही है। राज्य सरकार द्वारा अभी तक चलाए जा रहे पाठ्यक्रम में पर्यावरण अध्ययन को दो भागो में विभाजित करके देखा गया है। पहले भाग में भौतिक एवं जैविक पर्यावरण से जुड़ी वैज्ञानिक अवधारणाओं जैसे – शरीर के आंतरिक तंत्र, बल, प्रकाश आदि को स्थान मिला है तो दूसरे भाग में सामाजिक अध्ययन से संबंधित अवधारणाओं जैसे–मानव विकास की कहानी ,लोकतंत्र, औद्योगिक विकास, जलवायु आदि पर बातचीत रखी गई है परन्तु पर्यावरण अध्ययन विषय को नए तरीके से देखने की जो बात एन. सी. एफ. 2005 में कही गई है वह यह मानती है कि पर्यावरण अध्ययन विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और विभिन्न पर्यावरणीय मुद्दों का एक समेकित विषय है। इन्हें अलग–अलग तरीके से देखा जाना उचित नही हैं, क्योंकि वस्तुतः यह ज्ञान इतना अलग–अलग भी नहीं है।

प्राथमिक स्तर पर बच्चों के अनुभव भी काफी समेकित ही होते है, उदाहरणार्थ–पानी के बारे में सोचते समय बारिश के अनुभव के साथ–साथ जीव–जन्तुओं व पौधों के लिए पानी की जरूरत का एहसास भी बच्चों को होता है। इसी तरह पानी की कमी के भी अनुभव होते हैं जैसे– पानी का व्यर्थ बहना, उसको संरक्षित करना आदि मुद्दे भी इस आयुवर्ग के बच्चों के अनुभवों मे सम्मिलित होते हैं। इसलिए इसे विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की विषयगत धाराओं मे बाँटने की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। नया पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम पिछले पाठ्यक्रम से इस मायने में पूरी तरह अलग है। इसके अतिरिक्त इसमें बच्चों के अनुभव और उनके प्रश्नों को कक्षा में लाने के लिए पर्याप्त अवसर भी उपलब्ध कराए गए हैं। बच्चों को केन्द्र में मानकर चलने वाली इस व्यवस्था में आकलन को लेकर भी समझ में काफी परिवर्तन आए हैं और इस पाठ्यक्रम से अपेक्षा है कि विद्यार्थी–शिक्षक इन परिवर्तनों को समझकर अपनी कक्षाओं में अलग–अलग चर्चाएँ कराने के लिए तैयार हो सकेंगे। उनकी भूमिका को अब एक मार्गदर्शक के रूप में देखा जा रहा है जो समय–समय पर उचित प्रश्न पूछकर, अपने अनुभवों से कुछ नया जोड़कर या ऐसे ही किन्हीं और तरीकों से बच्चों को उनके ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया में सहयोग करेंगे।

पर्यावरण अध्ययन शिक्षण के इस नए पाठ्यक्रम को मूलतः पांच भागों में बांटा गया है –

1. पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति।
2. पर्यावरण अध्ययन की विषयवस्तु ।
3. बच्चों के अनुभव, उनके प्रश्न तथा पूर्व समझ।
4. अधिगम योजना का प्रारूप निर्माण व गतिविधि संचालन।
5. पर्यावरण अध्ययन में मूल्यांकन।

उद्देश्य

- विद्यार्थी–शिक्षक में पर्यावरण अध्ययन विषय के क्षेत्र, क्रमबद्धता और उसकी प्रकृति के बारे में व्यापक समझ बनाना।

Scanned with OKEN Scanner

- विद्यार्थी–शिक्षक प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण से जुड़ी अवधारणाओं पर स्वयं की समझ को पुनरवलोकन और विभिन्न चुनौतियों के आधार पर परखें ताकि कक्षा में विषयवस्तु पर चर्चा कराने की तैयारी की समझ बनें।
- पर्यावरण से जुड़ी अवधारणाओं के बारे में विद्यार्थी–शिक्षक बच्चों के अनुभव और उनकी समझ के प्रति सजग हों तथा इन अनुभवों और उनके परिवेश को कक्षा में नया सीखने के संसाधन के रूप में प्रयोग कर सकने की समझ बनाना।
- बच्चों की जिज्ञासाओं (विशेषकर पर्यावरण के सम्बन्ध में) का सम्मान कर उन्हें प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित करना तथा उनके साथ मिलजुल कर उनके प्रश्नों का उत्तर खोजने की दिशा में बढ़ सकने के लिए समझ बनाना।
- पर्यावरण अध्ययन की विषयवस्तु से सम्बन्धित शिक्षण अधिगम योजना का प्रारूप तैयार कर सम्बन्धित गतिविधियों का सुचारु रूप से संचालन कर सकने का कौशल प्राप्त करना।
- किसी भी तरह की पर्यावरणीय धरोहरों की आनंदानुभूति कर सकें, उनके संरक्षण के प्रति सजग हों तथा आर्थिक एवं सामाजिक सन्दर्भ में विकास से जुड़े इनके द्वंद्वों पर समझ बनाना।
- समसामयिक पर्यावरणीय मुद्दों पर समझ बनाना।
- पर्यावरण अध्ययन में बच्चों के मूल्यांकन के विभिन्न तरीकों की समझ बनाना तथा स्वयं द्वारा मूल्यांकन के नए–नए तरीके खोज सकने का कौशल प्राप्त करना।

इकाईवार विवरण

इकाई -1. पर्यावरण अध्ययन की प्रकृति — अंक–10

पर्यावरण–भौतिक, जैविक, सामाजिक, सांस्कृतिक, परिवेश का आपसी ताना–बाना – विभिन्न पर्यावरणों का आपसी ताना–बाना, पर्यावरण अध्ययन : एक विषय के रूप में, पर्यावरण संबंधी समसामयिक मुद्दे यथा पर्यावरण संरक्षण, पर्यावरण संवर्धन आदि, पर्यावरण अध्ययन पर विभिन्न दृष्टिकोण, अध्ययन और उपलबध सामग्री – पर्यावरण अध्ययन और उपलब्ध सामग्री, पर्यावरण अध्ययन पाठ्यक्रम व पाठ्यपुस्तकों में अपनाई गई सोच – पाठ्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ, पाठ्यक्रम का प्रारूप, पाठ्यपुस्तकों में अपनाई गई सोच

इकाई–2. पर्यावरण अध्ययन की विषयवस्तु एवं शिक्षण विधियाँ — अंक–20

परिवार, मित्र और आस–पास का वातावरण – परिवार एवं समाज में भूमिकाओं का बँटवारा, श्रम की गरिमा, जैव विविधता के सरोकार– ऋतुएँ और जैव विविधता – एक सर्वे व चर्चा, स्वास्थ्य और जैव विविधता, जैव विविधता का संरक्षण, संरक्षित क्षेत्र, सांस्कृतिक विविधता, संवेदनशीलता एवं समानुभूति, आँकड़े इकट्ठे करना और उनका विश्लेषण, सूर्य–चन्द्रमा, भोजन – भोजन में विविधता, भोजन के विभिन्न स्रोत, उत्पादन, वितरण और संरक्षण, संतुलित भोजन, भोजन सम्बन्धी आदतें व अभावजन्य रोग, ईंधन, आवास, विभिन्न आवासों की समझ, नक़्शा बनाना एवं नक़्शा पढ़ना, अपशिष्ट व उसका प्रबंधन, जल – जल स्रोतों के उपयोग, जल भरने में लिंग आधारित भूमिका व सामाजिक भेदभाव, शुद्ध जल एवं अशुद्ध जल – जल अशुद्ध क्यों हो जाता हैं? अशुद्ध जल से होने वाली बीमारियाँ, वर्षा – क्या आप बादल बना सकते हैं? तैरना–डूबना, घुलना, जल प्रबंधन, यात्रा – यात्रा के कारण, यातायात के साधन, सड़क संकेतों की पहचान, धरोहरों के संरक्षण में स्वयं की भूमिका, अंतरिक्ष यात्रा, कुछ करना और बनाना।

खण्ड–1 खिलौने बनाना, खिलौनों के प्रकार, रँगाई–छपाई, बरतनों के प्रकार

मिट्टी के खिलौने बनाना, खिलौनों के प्रकार, रँगाई–छपाई, बरतनों के प्रकार,

खण्ड–2 खेती व पशुपालन

खेती से संबंधित क्रिया–कलाप – खेती क़ैसे की जाती है, खेती के कार्य में आने वाले औज़ार/उपकरण, खेत में पानी कैसे–कैसे, कृषि से सम्बंधित कुछ समस्याएँ, पशुपालन, राजस्थान के भौगोलिक क्षेत्रों में खेती और पशुपालन की विशेषताएँ।

Scanned with OKEN Scanner

इकाई-3. बच्चों के अनुभव, उनके सवाल एवं पूर्व समझ अंक-10

बच्चों के सवाल और उनका महत्त्व, बच्चों के अनुभवों का दायरा, बच्चों के सवालों के उत्तर कैसे दें, बच्चों के सवाल – ई–ग्रुप, ब्लॉग, शब्दकोश, इंटरनेट जैसे संसाधनों का उपयोग, बच्चों के विचार, अलग–अलग अवधारणाओं के बारे में तर्क, बच्चों के विचारों व ठोस उदाहरणों की सहायता से सीखने–सिखाने को पियाजे और वायगोत्सकी के परिप्रेक्ष्य में समझना, रचनावादी सिद्धान्त क्या है?, पियाजे और उनका बाल विकास का मॉडल, वायगोत्सकी और सामाजिक रचनावाद, अवधारणाओं पर बच्चों के वैकल्पिक विचार और इससे सम्बंधित शोध, बच्चों की वैकल्पिक अवधारणाओं पर वायगोत्सकी के विचार, बच्चों की वैकल्पिक अवधारणाओं पर रोजलिंड ड्राइवर का काम, बच्चों की खगोलीय अवधारणाओं पर भारत में हुए शोध, बच्चों की वैकल्पिक अवधारणाएँ और शिक्षक की भूमिका

इकाई 4. अधिगम योजना निर्माण एवं गतिविधि संचालन

अंक-10

अधिगम योजना निर्माण, अधिगम निर्माण योजना और गतिविधि संचालन के उदाहरण, कक्षा के भीतर अधिगम निर्माण गतिविधि संचालन के दौरान चर्चा एवं बातचीत, विविध सामाजिक समुदायों और संसाधनों का अधिगम निर्माण में उपयोग, समुदाय के संसाधन, खोज के विविध तरीके, सर्वे कार्य, प्रयोग करना, सामाजिक समूहों का प्रतिनिधित्व, साक्षात्कार, गतिविधि संचालन एवं समय नियोजन, शिक्षण अधिगम हेतु योजनाएँ बनाना, अलग–अलग उम्र के बच्चों के विचार और तर्क, पुस्तकों का विश्लेषण : अलग–अलग आधारों पर, विविध पत्र–पत्रिकाओं का संसाधन के रूप में उपयोग

इकाई-5 पर्यावरण अध्ययन में मूल्यांकन

अंक-10

आकलन और मूल्यांकन, आकलन, मूल्यांकन, आकलन व मूल्यांकन में संबंध, मूल्यांकन के उद्देश्य, पर्यावरण अध्ययन में सीखने के सूचक, आकलन / मूल्यांकन की पद्धतियाँ, सतत एवं व्यापक मूल्यांकन, सतत एवं व्यापक आकलन पद्धति की विशेषताएँ, आकलन एवं मूल्यांकन के विभिन्न तरीके, पेपर–पेंसिल टेस्ट, नक्शा बनाना, चित्र बनाना एवं पढ़ना, सर्वे, परियोजना (प्रोजेक्ट), कक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों की प्रकृति व मूल्यांकन, बच्चों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न, शिक्षक द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्न, अभिलेख रखने के तरीके, सह–शैक्षिक क्षेत्र, पोर्टफोलियो एक रिकॉर्ड की तरह, रिपोर्ट के तरीके, व्यक्तिगत सामाजिक गुणों का आकलन करना, नयमित रूप से बच्चों के साथ रिपोर्ट साझा करना, मासिक मीटिंग में अभिभावकों से रिपोर्ट साझा करना, प्रश्न पत्र का निर्माण, प्रश्न पत्र निर्माण के मुख्य चरण, प्रश्न पत्र का ब्लू–प्रिन्ट बनाना

Scanned with OKEN Scanner

कला शिक्षा

कुल अंक–50

आंतरिक मूल्यांकन–20

बाह्य मूल्यांकन–30

कालांश–70

परिप्रेक्ष्य

सृजनात्मकता और सौंदर्य बोध प्रत्येक मनुष्य की जन्मजात विशिष्टताएँ हैं। मानव, अनुभूति में नई और उपयोग में संतोषप्रद रचना करने को सदैव उत्सुक रहता है इसके लिए वह शब्द, ध्वनि, रूपाकार, गति एवं भंगिमा जैसे माध्यम चुनता है।

मनुष्य की अनुभूति और सृजनात्मकता माध्यम के साथ उसकी अन्तःक्रिया एवं संघर्ष में परिलक्षित होती है। सृजन प्रक्रिया में मनुष्य सर्वांगीण रूप से क्रियाशील रहता है अर्थात उसका मन, बुद्धि व शरीर तीनों एक साथ क्रियाशील रहते हैं। कला एक प्रक्रिया भी है व प्रतिफल भी। कला अभिव्यक्ति की भाषा है और कलाकार की कल्पना, संवेग एवं अन्तर्मन का दर्पण है। अतः सौंदर्यानुभूति के प्रति रुचि जाग्रत करना शिक्षा का बुनियादी कार्य है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के अनुसार प्रथम दस वर्ष की सामान्य शिक्षा द्वारा बालकों के सर्वांगीण विकास करने का लक्ष्य है अतः बालक की सृजनात्मक एवं आत्माभिव्यक्ति के लिए कला शिक्षा पाठ्यचर्या का अनिवार्य अंग होनी चाहिए, इसी दृष्टि से इसके अन्तर्गत प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा के लिए प्रस्तावित पाठ्यक्रम में लिखा गया है कि – ''स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम में अभी तक कला शिक्षा एवं सृजनात्मक अभिव्यक्ति की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया है। कला शिक्षा का उद्देश्य बच्चों में चेतना उत्पन्न करना होना चाहिए ताकि वे रंग, रेखा, आकार, गति एवं ध्वनि के सौंदर्य के प्रति आकृष्ट हों। कला व सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन बच्चों को सराहना करने योग्य बना सकता हैं। कला शिक्षा खण्डशः नहीं दी जानी चाहिए। इस हेतु कक्षा दस तक प्रत्येक स्तर पर एक समेकित उपागम अपनाया जाना चाहिए।''

नाटक, चित्रकला आदि कलाएँ न केवल हमारी अभिव्यक्ति के माध्यम हैं बल्कि इनसे हमें स्वयं को समझने के अवसर भी मिलते हैं। उदाहरण के लिए विद्यार्थी–शिक्षकों को नाटक की विभिन्न गतिविधियों से खुद की क्षमताएँ, मंशाएँ, अपने समाजीकरण को चुनौती देने के अवसर भी मिलते हैं। कलाओं की प्रवृति ऐसी होती है कि विद्यार्थी–शिक्षक और बच्चे दोनों खुद को स्वतंत्रता से अभिव्यक्त कर सकते हैं। इस पाठ्यक्रम में अपेक्षित है कि विद्यार्थी–शिक्षक कलाओं के माध्यम से खुद को समझने का प्रयास करेंगे व विद्यालय से बच्चों को समझने के लिए कलाओं का उपयोग करने में सक्षम होंगे।

कला केवल एक विशिष्ट विषय के रूप नहीं में पढ़ाया जाना चाहिए बल्कि हर विषय के शिक्षण में और विद्यालय के समस्त क्रिया कलापों में कला–बोध एवं कला–माध्यमों का उपयोग होना चाहिए। चित्र बनाना, नाटक, नृत्य, कठपुतली, गायन, वादन आदि विधाओं का उपयोग एक शिक्षक प्रत्येक विषय शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कर सकता है। इसी कारण हर शिक्षक का विभिन्न कलाओं से परिचय और अभ्यास होना आवश्यक है।

यह तभी सम्भव है जब विद्यार्थी–शिक्षकों को सृजनात्मकता और कला बोध विकसित करने के अवसर मिलें, उन्हें स्वतंत्र अभिव्यक्ति और सृजनशीलता के लिए भरपूर उन्मुक्त माहौल उपलब्ध कराना होगा। कला–बोध केवल कला की विभिन्न तकनीकों को सीखने से विकसित नहीं होता है बल्कि उसके लिए कुछ सैद्धान्तिक अध्ययन, उत्कृष्ट कलाकृतियों का सौन्दर्यबोध भी जरूरी है।

इस विषय के अध्ययन में विद्यार्थी–शिक्षक को स्वयं के कलात्मक प्रतिभावों को विकसित करने तथा शिक्षण में उनके उपयोग करने के अवसर दिये जाएँगे।

सृजनात्मकता प्रत्येक बालक में जन्मजात रूप में पाई जाती है, आवश्यकता है उसे विकसित, पल्लवित तथा दिशा देने की। सिर्फ कला ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा बालक में सृजनात्मकता के बीज को बिना किसी नुकसान के विकसित कर उसे आनन्द की अनुभूति कराई जा सकती है।

Scanned with OKEN Scanner

उद्देश्य

- सौंदर्य चेतना जाग्रत करना तथा लोक–कला एवं कलाकारों के प्रति अनुराग उत्पन्न करना।
- विभिन्न सुलभ एवं स्थानीय साधनों द्वारा कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए प्रेरित करना।
- बच्चों की कलात्मक संवदेना को दैनिक–जीवन में भी बनाए रखना।
- बच्चों में कला की सराहना करने की क्षमता का विकास करना।
- समसामयिक और स्थानीय समुदाय के प्रचलित कला स्वरूपों का अवबोध कराना।
- कलाओं के माध्यम से विद्यार्थी–शिक्षकों को खुद को समझने के अवसर उपलब्ध कराना व विद्यालय में बच्चों को समझने के लिए कलाओं का उपयोग करने के लिए प्रेरित करना।
- विद्यार्थी–शिक्षकों को कला शिक्षण के कुछ बुनियादी सिद्धांतों से परिचित कराना ताकि वह अपने बच्चों में कलात्मक प्रवृत्तियों को बढ़ावा दे सकें।
- विद्यार्थी–शिक्षकों में उनकी कलात्मक प्रवृत्तियों को उभारना ताकि कला की विभिन्न विधाओं के प्रति उनकी झिझक टूटे। चित्रकला, नाटक, मूर्तिकला, संगीत इनमें से किसी एक विधा में विशेष हुनर हासिल करें।
- विद्यार्थी–शिक्षकों को भारत तथा विश्व की कलात्मक धरोहरों से प्रारंभिक परिचय कराना ताकि वे उत्कृष्ट कलाकृतियों का रसास्वादन एवं सौन्दर्यानुभूति कर सकें।
- विद्यार्थी–शिक्षकों को अपने परिवेश की सांस्कृतिक व कलात्मक धरोहरों को पहचानने व रसास्वादन में मदद करना।
- विद्यार्थी–शिक्षकों की सृजनशीलता को नए आयाम देना ताकि वे अनुपयोगी सामग्री से सुन्दर वस्तुएँ बनाने, कक्षा–कक्ष एवं विद्यालय को सौन्दर्यबोध के साथ सजाने की ओर प्रेरित हों।

इकाई वार विवरण

इकाई–1. कला क्या है ? **अंक–5**

कला की भूमिका, क्षेत्र एवं महत्त्व, संवेदना, अवलोकन एवं कल्पना, कला एवं संस्कृति, अन्य विषयों से कला–शिक्षा का सहसम्बन्ध।

इकाई–2. कला शिक्षण - उद्देश्य और विधियाँ **अंक–5**

कला शिक्षण क्यों? कला शिक्षण कैसे? बच्चों में चित्र बनाने की सक्षमता का विकास।

इकाई–3. दृश्य कलाएँ **अंक– 8**

द्विआयामी (चित्रात्मक) – रेखांकन, रंगाकन, कोलाज, छापांकन, राजस्थानी लोक कलाएँ, त्रिआयामी (तक्षणात्मक) – मृणशिल्प, पेपरमेशी, अनुपयोगी सामग्री से सृजनात्मक रचना निर्माण, मुखौटे, कठपुतली।

इकाई–4. प्रदर्शनकारी कलाएँ **अंक–8**

(संगीत परिचय) – ध्वनि–स्वर, सप्तक, अलंकार, लय– ताल, वाद्य– तंतु, अवनद्ध, सुषिर, धन लोक संगीत, लोकगीत, लोकवाद्य, लोकनृत्य, नाटक और भारतीय समाज, नाटक क्यों? नाटकीकरण, न कि नाटक, नाटक करने की विभिन्न विधाएं :– मंचीय नाटक, नुक्कड़ नाटक, एकांकी, मूकाभिनय नाटक, एकाभिनय, इंप्रोवाइज़ेशन (improvisation) नाटक के अंश : मंचीय अंश, नेपथ्य अंश, पुतली : नाटक का माध्य, निर्माण प्रक्रिया, संचालन प्रक्रिया।

इकाई–5. भारतीय कला, इतिहास, परिचय **अंक–4**

चित्रकला का इतिहास, मूर्तिकला का इतिहास, स्थापत्य कला का इतिहास, संगीतकला का इतिहास, नाट्यकला का इतिहास।

Scanned with OKEN Scanner

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी

कुल अंक –50

आंतरिक मूल्यांकन–30

बाह्य मूल्यांकन–20

कालांश–70

परिप्रेक्ष्य

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी वर्तमान शिक्षा जगत की महती आवश्यकता है। शिक्षा में तकनीकी एवं शिक्षा की तकनीकी दोनों ही शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के महत्त्वपूर्ण घटक हैं।

एन.सी.एफ.टी.ई. 2009 शिक्षा तकनीकी और सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी पर एक स्पष्ट परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार शिक्षक शिक्षा में शिक्षा तकनीकी और सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी का सबसे अधिक महत्त्व है। यह महत्त्व दो रूपों में है – पहला, शिक्षक द्वारा अपनी कक्षा में उपयोग करने के लिए, दूसरा उसकी अपनी शिक्षा को आगे बढ़ाने के लिए।

सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी द्वारा विद्यालयी पाठ्यचर्या और पाठ्यसामग्री को स्थानीयता प्रदान करते हुए काफी लचीला और बाल–केन्द्रित भी बनाया जा सकता है और बच्चों द्वारा लिखे या संशोधित किए गए लेखन को सीखने–सिखाने के लिए उपयोग किया जा सकता है। इसी के अनुरूप विद्यार्थी–शिक्षक की क्षमता विकास करना इस पाठ्यकम का उद्देश्य भी है।

उद्देश्य

- शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी तथा ई–लर्निंग की महत्ता की समझ बनाना।
- शिक्षण अधिगम परिस्थिति में तकनीकी को पहचानना, विकसित करना एवं आवश्यकतानुरूप प्रयोग करना।
- विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उपकरणों तथा तकनीकों का प्रभावी संप्रेषण में उपयोग करना।
- स्थानीय शिक्षण सामग्री का अधिगम विस्तार में प्रयोग करना।
- विद्यार्थी–शिक्षक को कम्प्यूटर तकनीक का उपयोग करने में सक्षम बनाना।
- विद्यार्थी–शिक्षक द्वारा शैक्षिक तकनीकी के सभी पहलुओं का उचित उपयोग करके अपने शिक्षण को अधिक प्रभावी बनाना।
- विद्यार्थी–शिक्षक को शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया तथा मूल्यांकन प्रक्रिया को प्रभावी बनाने हेतु आई.सी.टी. का उपयोग करने में सक्षम बनाना।
- विद्यार्थी–शिक्षक व बच्चों में समूह में कार्य करने की प्रवृत्ति विकसित करना।
- डेटा व्यवस्था (Data Management) की तकनीक सीख कर उनके उपयोग से विद्यालयी कार्यों को करने में सक्षम बनाना।

इकाईवार विवरण

इकाई-1. शैक्षिक तकनीकी, सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई-लर्निंग — अंक-4

शैक्षिक तकनीकी का अर्थ, प्रकार एवं क्षेत्र,

सूचना तकनीकी तथा ई–लर्निंग की अवधारणा एवं शैक्षिक आवश्यकता

शिक्षा में तकनीकी और शिक्षा की तकनीकी,

कम्प्यूटर सहायता अधिगम (C.A.L) कम्प्यूटर सहायता अनुदेशन (C.A.I.) एवं ऑन लाइन शिक्षा से अभिप्राय एवं वर्चुअल क्लास रूम,

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन में शैक्षिक तकनीकी का उपयोग

Scanned with OKEN Scanner

इकाई–2. विभिन्न संप्रेषण तकनीकों का शिक्षा में उपयोग अंक–5

संप्रेषण–की अवधारणा, प्रकार, आवश्यकता तथा सीमाएँ – संम्प्रेषण का चक्र, सम्प्रेषण के प्रकार, संप्रेषण की आवश्यकता, सम्प्रेषण के लाभ / गुण, संप्रेषण की सीमाएँ

एडगर डेल्स के अनुभव शंकु – एडगर डेल के अनुभव शंकु के गुण

विभिन्न सम्प्रेषण उपकरणों का शिक्षा में उपयोग

शिक्षा में संप्रेषण उपकरणों एवं सहायक शिक्षण सामग्री का प्रभाव एवं उपयोग विधि:– रेडियो, टेलीविजन, प्रदर्शन बोर्ड– श्वेत / श्यामपट्ट, लपेट फलक, लालेन बोर्ड, क्लिप बोर्ड, इन्टरेक्टिव बोर्ड, प्रोजेक्टेड सामग्री– ओवर हैड प्रोजेक्टर, विजुलाइजर / डोक्यूमेंट कैमरा, डिजिटल कैमरा, मोबाइल, मल्टीमीडिया प्रोजेक्टर, कम्प्यूटर– डेस्कटॉप / लेपटॉप / टेबलेट, टेप रिकॉर्डर / आल इन वन / CD प्लेयर

समावेशित शिक्षा एवं तकनीक

आडियो / विडियों स्क्रिप्ट राइटिंग, अभिक्रमित अनुदेशन, स्थानीय सामग्री का उपयोग – ऑडियो स्क्रिप्ट लेखन के विभिन्न आयाम, विडियो स्क्रिप्ट लेखन, अभिक्रमित अनुदेशन / अधिगम

स्थानीय सामग्री का उपयोग

सूक्ष्म शिक्षण, कृत्रिम शिक्षण / अनुरूपित शिक्षण, दल शिक्षण

इकाई–3. वर्ड प्रोसेसिंग और डेटा प्रोसेसिंग सिस्टम अंक–7

कम्प्यूटर का परिचय – कम्प्यूटर की कार्य पद्धति, कम्प्यूटर के गुण, कम्प्यूटर आरंभ करने की प्रक्रिया

ओपन सोर्स

शब्द संसाधन (वर्ड–प्रोसेसिंग) – शब्द संसाधन के लाभ, वर्ड प्रोसेसिंग पैकेज के उदाहरण, वर्ड प्रोसेसर की महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ, शब्द संसाधन को इंस्टाल करना, शब्द संसाधन प्रारंभ करना, शब्द संसाधन स्क्रीन के महत्त्वपूर्ण घटक, मुख्य मेनू (Main Menu), मुख्य मेनू विकल्प, ऑफिस बटन, होम मेनू, इन्सर्ट टेब, पेज लेआउट मेनू, रिव्यु मेनू, व्यू मेनू

डाटा प्रोसेसिंग एंड मेकिंग वर्कशीट – ODT, एक्सेल को प्रारंभ करना, एक्सेल विंडो, ऑफिस बटन, वर्कबुक (Workbook) का निर्माण, वर्कबुक को सुरक्षित करना, वर्कबुक को खोलना, वर्कशीट का प्रिंट आउट निकलना, प्रिंटिंग का पूर्वावलोकन, वर्कशीट को प्रिंट करना, वर्कबुक को बंद करना, एक्सेल पर कार्य समाप्त करना, रिबन, होम मैनू, इन्सर्ट मैनू, पेज ले–आउट मैनू, फार्मूला मैनू, डाटा मैनू, रिव्यू मैनू

इकाई–4. पॉवर पाइंट, इन्टरनेट, कम्प्यूटर का रख-रखाव एवं मल्टीमीडिया अंक–4

पावर पॉइंट – पावर पॉइंट विंडों को खोलना, पावर पॉइंट स्क्रीन के महत्त्वपूर्ण घटक, मुख्य मैनू विकल्प, होम मैनू, इन्सर्ट मैनू, एनीमेशन मैनू, रिव्यू मैनू, व्यू मैनू

मल्टीमीडिया, इन्टरनेट, ब्ल्यूटूथ, इंटरनेट ब्राउज़र, ईमेल (E-mail) आई.डी. का निर्माण, इलेक्ट्रॉनिक कॉमर्स, इन्साइक्लोपीडिआ (विश्वज्ञानकोश), कम्प्यूटर का रख–रखाव, साइबर क्राइम

Scanned with OKEN Scanner